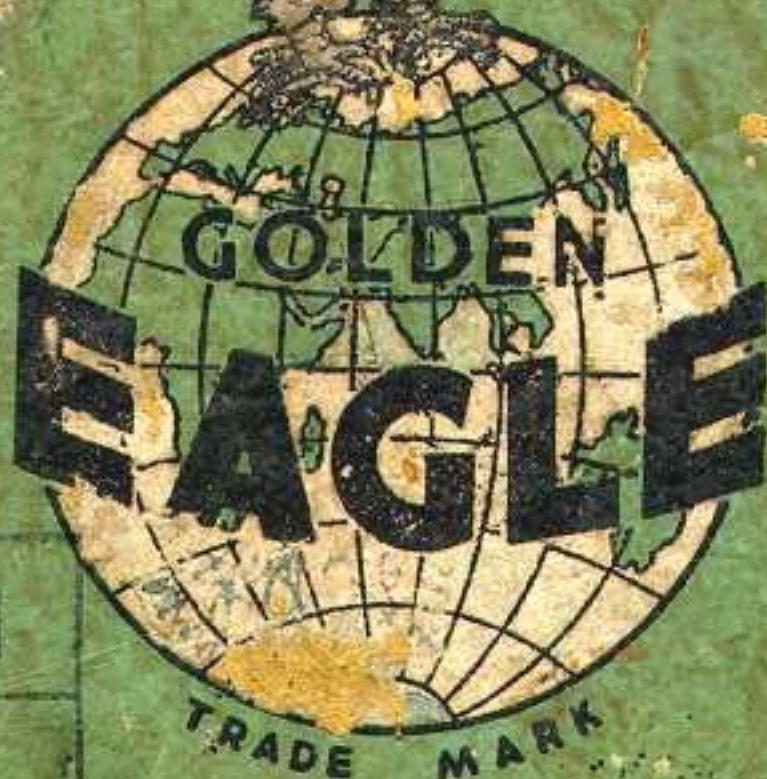




159-
Buddhist
Vidhi.

[Faint, illegible text]	
426	I

ASIA 100/25

Exercise Book

NAME _____

SCHOOL _____

CLASS _____ SEC _____

SUBJECT _____

नित्य कर्मणा ॥ २ ॥

7-x तित्य आथ स्मर्त व्यख्याय

२ * चौ ताल - १ नाति खतली - * चात्ती पाल्हायण

१-४ च ली = ४५०० ताक ५-४ मर्या

9x वाल्मीकि + नैलरवाली ५ - x ३३

२० x न्याशायगदीदीश्वतकुप—x चल्लीत्वाल्हावग

2-x औं कारण-घेदीतस्वलीन 4-x मूल्या

2-x भ्यानां श्वरगतीना ५-x औ

२-४ ओं साक्षात् रक्षातिना ६-४ चाली चालाकसु

2-x ~~या~~ २५ मराठा कपली चे - x ~~या~~

३- $\times$ औ रगतनी रवख ६- $\times$ औ

3-x + ह्या चीन्ही ता घ्ये डाक ६-४ चल्ती पाव्ताय

म-+ औ दीक्षा उपनाम, ह-+ रक्षा

3-x चली चान्पाटायादी ०-x जो

3-x ओ चारु नि धर् 3-x सी धी वर

सीधे व्यंग धाति २।ति

* चाली उपलब्धिना

* सुखा वाल्हा शथग रवली धा धे ली वी ग

x हारा नीनी तान या

$$-x \quad \frac{2x}{511}$$

श्री
श्री नित्य ध्याय सन

1/24/1

ध्यायः

१ स्वः स्वः दी दी ध्ये ध्ये नानाः

२ स्वदीत स्वातिजक नागर मना मना

३ दी दीत स्वातिजक नागर मना मना

४ ध्ये दीत स्वातिजक नागर मना मना

५ नां दीत स्वातिजक नागर मना मना

६ स्वं दीत स्वातिजक दी दीत स्वातिजक

७ ध्ये दीत स्वातिजक ना दीत स्वातिजक

८ ति दीत स्वाति दीत स्वाति ध्ये नां दीगी नां

९ ध्ये नामना ध्ये नादी ध्याः स्वना दीत ध्ये ना ध्ये

१० ध्ये ध्येन ति ति तक ध्याः ॥

(चो लाल ॥)

नातिः स्वतातिः नाति स्वता ध्ये नीना ध्ये नीना ति ध्ये नीना

(चलती)

ध्ये नी ताक ध्ये नी ताक ध्ये नी ध्ये नी स्वति ताक ध्ये ति नी

स्वं ध्ये ति ना इ

(पाल्हायग)

नां नाति स्वातिना नाति स्वति नाना

रग ध्यां ति नीना रग नाक ध्या ध्ये नी ना

(स्थायगु)

दीति स्वाति ताक ये दीति स्वताक ये २

(गौः कायगु)

ये दीत स्वाति जाक नाँ ये दीत स्वाति जाक नादी त स्वाति
जाक नादी त स्वाति जाक नायेना ३ ये दीत
स्वाति जाक नादी त स्वाति जाक नाये २ नाद्य नागति
ये नाग धाँ रग धाँ नाति स्वता स्वतक दिन्दि x
ये नाक २ ति ये नाक २ ना ये ना स्वाति धाँ
रग धाँ तिनी ना रग नाक धाँ ये तिनी ना (च)

(स्थायगु)

नाँ स्वः रग तिनी ताये ये नाक तिनी धाँ ये नाक
तिनी रिधी ग दीगना ३

(गौ)

नादीत स्वाति ना दीदीत स्वाति ना ये ति ये ना २
स्वाति ये ना २ ये ये नाये ३ नाति स्वता ये नाक
धाँ ति ता स्वाति रग नादी धाँ ति ये ति ये ना (धे)

(स्थायगु)

रु मरी ताक धुली रु मथो २ रु मरी ताक धुली
ये ना दीगना २ रु मरी ताक धुली स्वाति धाँ धाँ
ति धाँ दीगना २

रग तिनी खरख तिनी खता खती दीता खता
 धेना मना धेनीना । धेतिनी खरखतिनी
 खता खती दीता खता धेना मना धेनीना
 धेनक धिनी ता खति रगनादि धाति धा २
 दीगना दीगना २

(न्या)

दीन्दी ता धेजक धेना किन्दी ता धेरी धी दीगना
 नाँसा ताक दुली ताधे धेनाक दुली धाँनक दुली
 रीदी गना २

(गौ)

दी धाँ खना, दी धाँ रगताती खता धेनक धिनी ता खती
 रगना २ खदीता खतीना दी दीता खतीना
 री धा २ धेना खति धा २

(चलती ल्याल्हायग ॥)

धे दीगना

धाँ दीग नादीग ३ धाँ दीग नादीग ३ धाँ दीग नादीग ३

(गौ)

धाँ ३ ति धाँ खतीनाती खता ३ खना ताता खता धेना
 धेना खता धेना तिनी ता २ खति धेना खती नाती खता
 दीगनाति खता धेति धेना ति

॥ स्त्री ध्वज ॥

धाती २ ति स्वाती ३ नाति धाति स्वाती धाति धा
धां ग स्वाती स्वाती नाति स्वाती ध्येनीना २ ध्येनाति धी

॥ जति ताल ॥ धाति

तिनी ता २ स्वाती नाति नाति स्वाती रीधां धाति धा
ध्येनीनाः

॥ धाली ॥

स्व तिनीनां ताक रथ मरी ताक ध्येनी धाति
ध्ये ध्ये तु मरी नाः

॥ त्वत्थग ॥

स्वाति धाति तिनी ता २ स्वाती ता ध्ये नाति स्वाती
रीधां धाति धा ध्येनीनाः

॥ न्या ॥

ध्ये तिनी ता स्वाती ताक धाति ३

॥ री ॥

तिनी ताक धाति स्वाती २ तिनीना ताक धाति ३ तिनी ताक
स्वाती ता ध्ये नाति स्वाती रीधां धाति धा ति ध्येनीना

धाली त्वत्थग

स्वनां ध्येनाक ४ ति ध्येनाक ४ ना ध्येना स्वाती धाति
तिनी ता २ स्वाती ता ध्ये नाति स्वाती रीधां धाति धा
धा ध्येनीना

नां स्वतीता ध्ये ध्ये नाक ध्ये धां ध्याति रीती दीगना ३

(ॐ)

नां ३ स्व ति ध्ये ना २ नागमना स्वती ~~ना~~ ध्येना दी ३
दीगर्गमना स्वतिना दीगर्मना स्वति ध्येना
ना २ नागरीमना स्वतिना दी २ दीगर्मना स्वतीना
नागर्मना दीगर्मना स्वति धां तिनीता २ स्वति ताद्ये
नाति स्व ता रीथां ध्यांति धां ति ध्येना

चलती त्वत्प्राग्य

ध्येनाक ४ ति ध्येनाक ४ नां तीनीता २ स्वतीताद्ये
नाति स्व ता रीथां ध्यांति धां ध्यानीना

(॥ अष्टा ॥)

रथ मरी ता रथ मरी ताक दुती स्व, दीगना २
रथ मरी ता २ रथ मरी ताक दुती स्व दी ध्येना
दी दी ध्येना दीग धां ध्येनाक धि दीना

(ॐ)

ता क ध्येना स्वना, ताक ध्येना, ताक ध्येना स्वतिना
ताक ध्येना स्वति ध्येना, ताक ~~दीक~~ ध्येना ताक ध्येना स्वतीना
दीग ध्येना स्वती ध्येना, ताक ध्येना ताक ध्येना स्वतीना
दीक ध्येना दीक ध्येना स्वतीना ताक ध्येना दीग ध्येना
तीनीता २ स्वति ताक ध्येनाति स्वता रीथां ध्यांति ध्ये

येनघ ४ ति येनघ ४ ना येनाखती धः तीनीता २
खती ताद्ये नातीखती सीधाँती धाँ धेनीना

((न्या॥))

खदीता खता खती दीता येनीना दीतीता खता
खती दीत येनीना येनघ २ ध्यन्ना नातीखता
येनघ २ ध्येनाना ध्येना २ तिधेना खना

((ॐ॥))

खता ध्येये तीनी खतीती रगतीनी ध्येतीती
रगनामना खतीना दीता ध्ये तीनी रगना सीधा
दीगना २ दीत ध्येये तीनी दीती ती रगतीनी
ध्येतीती मती रगनामना खतीना खता ध्येती
ति रगना सीधाँति धाँ दीगना २ खता ध्येयेतीनी
खतीति रगतीनी ध्येतीती मति रगनामना खतीना
खता ध्येतीनी दीता ध्येतीनी धाँ तीनीता २
खतीताद्ये नातिखता सीधाँती धाँति धेनीना
खना

((चलति वाल्मीकि॥))

येनघ ४ ती येनघ ४ ना येनाखती धः
तीनीता २ खतीताद्ये नातिखता सीधाँती धाँ
धाँ धेनीना

दीगतीनी
खतीनी

71

॥ नमः ॥

चाँ तीक्ष्ण नाद्रीग २ नातीक्ष्ण नाद्रीग ३

॥ गौ ॥

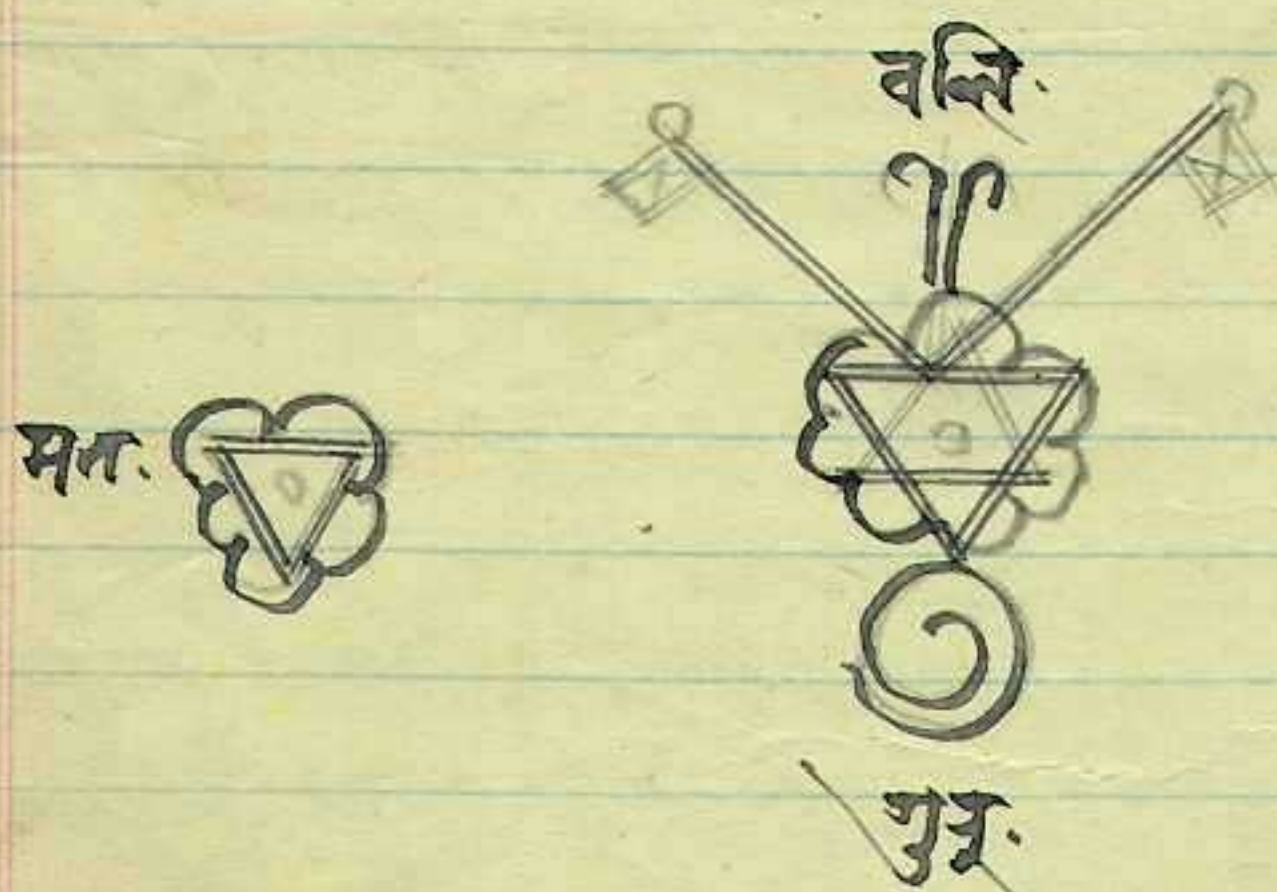
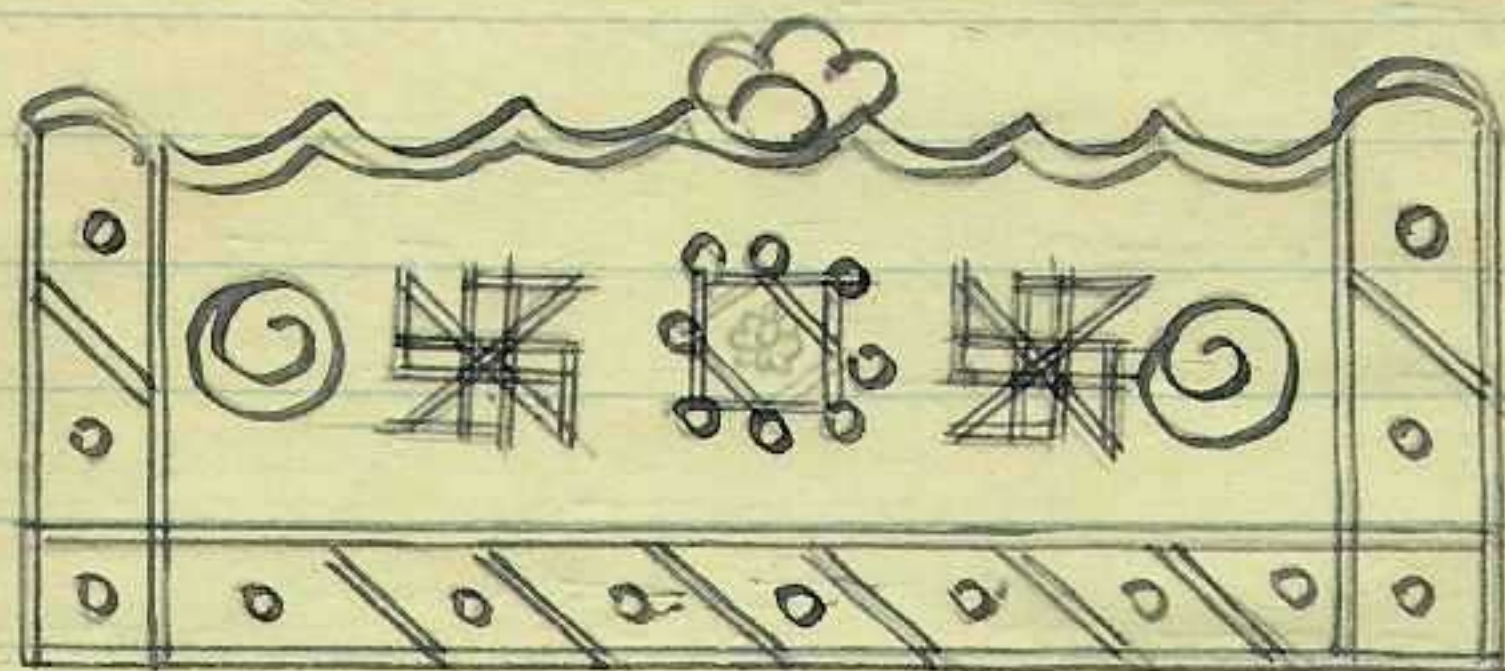
ताक चाचाँ खनाँ ताक चाँ चाँ चातीनी नादीतीनी
दी तिनीनाती दीग चाचा चातीनीनादी चाँ खना
खेनशाली २ चाँ तीक्ष्ण खती जफुमिदी २
ना नाद्ये तीक्ष्ण चा खना

सीधे क्यग

चाँ घेतु मारी २ जफुना २ नाद्ये तुमारी जफुना
चाती चा तिनीता घेनीता खती ताद्ये
नाती खता घे ना घेरी ती ताक चा घे #

5/1

५. सकल कलश गाथा सि.



उन्नमार्थी वज्रसत्वायः ॥ ॥ उन्नमार्थी वज्रसत्वायः ॥ ॥ उन्नमार्थी वज्रसत्वायः ॥
 स्वाहा ॥ श्रीं अमुन जि उन्नमि स्वाहा ॥ हृदय स्वाहा ॥ श्रीं स्वा
 हा ॥ काय विष्णु धन स्वाहा ॥ पादोपक्रादभस्वाहा ॥ श्रीं श्री
 नाथं पनी कृ स्वाहा ॥ धन पूजार्थ धियानय ॥ उं सिद्धि वसु
 क्रियायश्च वृद्धि वसु धनगम ॥ पूरिचसु सवी प्रवृष्ण निच
 सुगुहागम ॥ उन्नमार्थी वज्रसत्वायः पूष्यकिं नु वाजाय नथागनायां
 हर्षसम्पत्कसंवृद्धाय ॥ नयथा ॥ पूष्य २ म हा पूष्य सपूष्य पू
 ष्य संरुध पूष्य विकानक कमन पूष्यावकिच ॥ ॥ ॥ स्वाहा ॥
 दानयनियजमानस्य भपालमधुलानकयगनललिनयक
 नम हानगया नवीधु ऊष्ण वरभास महाविहायान यथा
 दिगुलागानिवासिन गोकुल गगनात्पन्न वज्रावाय्य यथा
 नाम धायस्य लार्या पूनपूणि थो न थो नादि सयपिवाय
 सवेषां सवी प्रवृष्ण आभास नृधय्यादि सूरुल्लपाय
 थं ॥ ॥ ह ऊन्नमि सूरवसंपत्ति पवनवामाकृगति धर्मार्थ
 कामभाक चमुकुं रूल्लपायर्थ ॥ हानाहान कनसमस्त
 दुःखपापक्षमार्थ आदिद्यादि नवगुहा विष्टुष्मनि वाज
 नोदोदकाग्नि विषक्षस्त इर्लक्षि पवनवृक्षक्ष रुयादिशु
 ष्टमहारुयादि निवायार्थ ॥ सफवृद्धि पवनक्ष धनवक्रा
 दिस्तु विक्ति रूल्लकामनाथ ॥ अकालमृत्पू लयनिवाय ॥

थं पूर्वकदीर्घायाम् शुक्लरुलपाफ्यर्थं ॥ गडरुज दुर्लिका
 दिदाविड इव रुयपहिम सकलशुक्लरुलपाफिकामनार्थं
 अस्मिन्दिनं रूपावन्धुमिन्धुषीपयमध्वयपयमध्वरी द
 वदवी आवाहनाय सूपसनेहावा ॥ संपूर्ण कलशवना
 दि गलश महाकाल आयुवृद्धि पञ्चगामा लम्बीवि
 दवानय दधना आवाहनाय यथाशक्त पञ्चपचापपूजा
 कर्तु ॥ यथायथा क्रिया कर्मा ॥ ६३ दं कमलपुष्पाक्षुनम
 स्तुतामि ॥ पूजा रथिया अयाय ॥ पूजा रुल उल्लाना कथि ॥
 पुञ्जोदो कल्याण मय कल्याण पय कल्याणि कल्याण ॥ ६४ व
 भावजन कवलपविपूषु पर्यवराय वज्रवर्य संपकाश
 यन्निस्मह ॥ ॥ उन्नमो जीवजसनाय ॥ ॥ प्राया
 जाकि हाजलपावाक् ॥ ३ गुपूवृद्ध गुपूधम्म अन्नसंयन थि
 वच ॥ गुपूवृद्ध धव ॥ ६५ व गुपूसर्वनमाम्यहम् ॥ जाकि नि
 नाशुय ॥ हानं जाकि दाना विनिधाय ॥ उन्नमो जीवजस
 नाय ॥ ३ वृद्ध जीवजसना सुवधवगुपू सर्ववृद्ध रुवन्तु
 नानापूष नयन निमिरुयहं निर्मिगभपू संस्तिन धम्मो
 धप मूनीना जिनवच सुगता मधुलवडा वरु सर्वानन्द
 कपूय सहज सुखमयं दहिनाभा क हन्तु ॥ ॥ धनल
 खल धनयाय ॥ ३ वरुप पूषवदननम ॥ ३ वरुप पूष

॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते
सामर्थ्यानि नमो जलपाशमहावल ॥ निर्विकल्पं निर्विषयं
वसुधाय नमः ॥ ॥ धनं धनं धनं ॥ ॐ श्रीः ॥ ॐ
श्रीगणेशाय नमः ॥ अमृतं रुचं नुक्तु स्वाहा ॥ अलिखितं विन्दु
मां सर्वं नथागतं सु यथा ही जगन्मणिं स्यापिनाद्युद्ध दिव्य
त्रयं निष्ठा नथा हंसाकपिष्यामि ॥ ॥ धनं देवतायान्
स्नानयच्छि ॥ ॐ येन मंगलं सकलसत्त्वं हृदयस्थितं न स सर्वो
त्मकस्य ॥ वसुधैव कुलाधिपस्य निष्ठासत्त्वं जनकस्य महा
सूरस्य नमः मंगलं रुचं नुक्तं पञ्चमालिखक ॥ ॥ श्रीकृष्ण
ॐ धनं विन्दुसमाधत्मा आख्या सुधा हंसा विना ॥ अमृतं हास
अनूकपात्रं हंसाकर्मसमूहं ॥ ॥ अलिखक कथयिः ॥
अलिखक महावृद्धं शुभा मुक्तं नमस्कृतं ॥ ददामि सर्वं वृद्ध
नामि गृह्याथ च संस्तुव ॥ धूपकं ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अहं पूजा करी व्यामि सदा मां समुखा
रुव ॥ रुपावन्धुमन्धु ह्रीं वृद्ध धर्म सद्यः निपन्न आवाह
नाय ॥ ॐ देवदत्तं धूपं निर्यान्मया मि ॥ आपययय ॥ आकस्य
स्य पादाद्यं पूजायाय ॥ स्नानवाय ॥ ॐ वृद्धाय नमः ॥
सिंहाय स्वाहा ॥ ॐ धर्माय पूजाय मिनाय स्वाहा ॥ ॐ संया
य आर्याविला किं न वनाय स्वाहा ॥ ॐ आर्याविला वनाय स्वाहा ॥

ॐ अक्षयस्वाहा ॥ ॐ चन्द्रसंखवायस्वाहा ॥ ॐ अमिताभा
 यस्वाहा ॥ ॐ अभायसिद्धिस्वाहा ॥ ॐ पावनायस्वाहा ॥ ॐ
 मामकीस्वाहा ॥ ॐ पादुवायस्वाहा ॥ ॐ आर्यनावायस्वाहा ॥
 ॐ वज्रपूषं पतिं सुस्वाहा ॥ पञ्चपञ्चपूजास्तुति ॥
 ॐ नमस्कृ वृद्धनूपाय धर्मनूपाय नमः ॥ नमस्कृ संघनूपाय
 पञ्च वृद्धाय नमः ॥ ॐ नमस्कृ पञ्च वृद्धानां अक्षय्यादिकूल
 मय ॥ मध्यवेलाचननाथ पञ्च वृद्धनमस्तुति ॥ ॐ वज्रिष्ठाय
 ममविथ नार्यहलि ॥ धूलिस्वरावपूजा ॥ हाननावाय ॥
 ॐ नमो अगवर्त पूषकिमुवाजाय नथागनाया हर्त सम्यक् स
 वृद्धाय ॥ नयथा ॥ ॐ पूष २ महापूष सूपूष पूष संखवपू
 षाविकान्कमन पूषाविकनकुस्वाहा ॥ ॐ यथा अन्वाय ॥
 खानकुण्ड अगवाहा खगवाहानन शिथकुण्डमय ॥ ॐ अक्ष
 तिकाया धिष्ठान सर्वपापानपनह २ मिष्टवजा ६ भिस्वाहा
 ॐ मसिधनीवजिनी महापतिमयवक्र २ मांसर्वसत्वावहं रु
 दस्वाहा ॥ सिद्धनिर्ध ॥ ॐ सुवर्ण मिलक विरयभपति
 कुस्वाहा ॥ मधुलथिय ॥ ॐ यथा ॥ ॐ सर्वविद्याकाय ॥
 वज्ररुमह वज्रलख वज्र सुलख २ सर्वगगनसु गुरु
 मृधिमिष्टकुस्वाहा ॥ मधुलकापूय ॥ ॐ दानगमयमस्वना
 वसहिमं जीलं वसमाजनं कानिद दनयिपिलिकापनय

नवीर्याक्रेथास्वापनं ॥ ध्याननमस्तुभक्तविभूक्तयः पद्मासुल
 श्वाकला नगापायमिगायनवचनं कृत्वा मुनिमधुल ॥ रव
 तु कनकवर्धुः सर्वपापविमूकं सूपममृजुं विमिष्टं चन्द्रवद्वि
 पिकानि धनकनकसवृद्धिजायनपाज्जवं ॥ सुगमवपगृहः
 सिंकायकम्मानकृत्वा ॥ ॐ श्रीः हंससुलभ २ सर्वनथागनसु
 गृध्रचन्द्रार्क विमलपनिष्ठस्वाहा ॥ धनध्यानयाथ ॥ ॐ मन्त्रादि
 स्थितमिममध्य यंकापादिचतुर्विजसंज्ञानमहात्मनवायूज
 निहलावलिमधुलं पयिस्कापधनमध्यमपूजसिंहासन
 स्थितं पद्मकन्दं श्रीवज्रसत्त्वद्विरजकमूरं धुल्लवधुं वज्र
 दध्नाधपविमिगा रक्तं रजिपञ्चिपनीवप धाविभं हं दुनील
 वर्धुः अक्षर्यादिलंकृतं रगवकंगुपूरुहायकध्यात्वा ॥ ॥
 श्रीकवेषयाथ ॥ ॐ स्वरावसूक्ष्मसर्वधर्मानास्वरावकुष्ठिहं
 धुन्यनाह्वानवज्रस्वरावात्मकहं धुन्यविराग्य ॥ ॐ वज्राकवेष
 हं २ ॐ वज्रवर्धुः २ ॐ वज्राकृष्ण ॥ श्रीवज्रयाज ॥ हं वज्र
 स्तुतम ॥ वं वज्रनिधहा ॥ हं हं हं उपवज्रकायाय धीमन्
 धीधौगुपुमधुल वज्रसत्त्व रहायकाय चपञ्चकमलस्य पा
 याचमनाद्यपनिष्ठस्वाहा ॥ ॥ जाकिहापूविवाय ॥ ॐ ऊ
 हं वं हां हं सुमाज्जलिनाथमधुल वज्रपूष्ययाज ॥ स्वानवाय ॥
 ॐ हं मध्यमयवनम ॥ ॐ हं ॐ हं वयवनम ॥ ॐ हां हं ॐ वयवन

नमः॥ ॐ यंपूर्वे विदहाय नमः॥ ॐ यं जंवा विपाय नमः॥ ॐ यं अय
 प (ग) उ व लियाय नमः॥ ॐ वं उरु न कूच नमः॥ ॐ या उप दि
 पाय नमः॥ ॐ या उप दि पाय नमः॥ ॐ ला उप दि पाय नमः॥ ॐ
 वा उप दि पाय नमः॥ ॐ न ग उ प त्राय नमः॥ ॐ यं पू च य त्रा
 य नमः॥ ॐ यं अरु च य त्राय नमः॥ ॐ वं रु च य त्राय नमः॥ ॐ या च
 क य त्राय नमः॥ ॐ या र्क य त्राय नमः॥ ॐ याम सि य त्राय
 नमः॥ ॐ वं स र्व नि धा न य नमः॥ ॐ अ र्च न दाय नमः॥ ॐ अ
 सूर्याय नमः॥ श्री म नू व ज स त्व गू च नमः॥ ॐ अ ग क २ र्ण
 व न गू च धि मि तृ मु क्त स्वाहा॥ सि द्ध मि तृ ॥ ॐ वं ज ग र्ध
 स्वाहा॥ ॐ वं ज सि चू पाय स्वाहा॥ ॐ वं ज पू धि र वा हा॥ ॐ वं
 ज धू प स्वाहा॥ ॐ वं ज दी प स्वाहा॥ ॐ वं ज न व श स्वाहा॥ ॐ वं ज
 वा जाय स्वाहा॥ ॐ वं ज द र्शन रू प्ताय स्वाहा॥ ॐ वं ज ना म्ब
 ल य मि तृ स्वाहा॥ ॥ ना स्या क्थ ॥ ॐ वं ज स त्व सं ग्रा ह क
 व ज य त्र म नू न य व ज ध म्म का य ध न व ज क म र्क वृ ह व ॥ ॐ
 वं ज ल स्थ ॥ ॐ वं ज मा ल्म ॥ गं वं ज गी ति ॥ ॐ वं ज गृ प्म २ वं ज
 पू थ ॥ ॐ वं ज धू प गं वं जालि क्थ ॥ ॐ वं ज ग र्ध २ न म र्क मु
 न मा मि न मा न म ॥ ॐ वं ज हा व ज ॥ हा स्वा हा य ॥ ग किं २ ॥
 हा न र्म ग वान ॥ ॐ न म वृ द्धाय गू च न मा ध म्मा य ना य न म
 सं दाय म ह क्थ ॥ ॐ अ ॥ ॐ श्री म नू व ज स त्व गू च न य क म

लाय ॥ ३ नमोऽस्य कृष्णानावरासनकपाय ॥ नमोऽस्य नमस्तु
 नमामि नमानम ॥ रुक्मा हन्तानमस्यामि गुरुनाथपुसिद्धिभ ॥
 यस्यपसाद कियत् ॥ रुक्मिणात्मकत्व पत्रपुत्राय विक्रप ह
 नांधकावा ॥ पक्षपत्रनावियदृष्टा सवितासमुच्चै नमस्तु
 नययंगुपुत्रास्तुनाय ॥ नमस्तु नययाय ॥ गिरिपतिष्ठानमस्तु
 सर्ववृद्धनमस्यामि धर्मचिन्तितराधिनं संघचर्चापसंपन्न
 पत्रगुणनमस्तु ॥ पत्रगुणमहायजसर्ववृद्धिदिष्टाभयजु
 नूमादिउगदत्तपूज्य वृद्धवाधोदधनम ॥ आवाधोऽयजसं
 यामिवृद्धधर्मगनात्मनः ॥ वाधोचिन्तितराधिनं स्वपवार्थप
 सिद्धय ॥ उत्पादयामिपयमं वयवाधिविचिन्तितमं यामिवय
 सर्वसत्त्वार्थ ॥ ६७ दृष्टान्तिष्वयववाधिविचिन्तित वृद्धान्वयं उग
 नाहिनाय दृष्टानासर्वपापानां पूज्यानां चानमादिनां कृत्वाप
 वासकपिष्यामि आयाहांगमूपावरं ॥ मधुलसजाकिलरव
 हायकं ॥ ॥ ३ अष्टांगमथामपुत्रगुणद्विपुत्रास्तिमंस
 फयत्रसमाकर्तुं नदनूकपदायनीगुरुवृद्धधर्मस्था संघ
 ॥ ६७ नथवच ॥ आत्मानिर्थाक्यामिरावेन संपूर्ण पत्र
 मधुल ॥ आकिद्वानाविंक्रियाथ ॥ ३ अनादिगानिसंसाध
 ऊमन्नत ववापुन ऊमयापडुनापायं कृतकाविमभववा
 यमनूमाजिन किंचिद्वात्मघानायमाहिना ॥ नदनय

दक्षायामिपक्षमापननापिता. नचगुयपुकाभाआमागापिगृ
 चवामया ॥ गुरुस्वनेकवाक्रिपाकायवा. वृद्धिरिकृग ॥ अत्र
 कदाय इक्षुन. मयापापनमाहिना. यमकृगंदापुष्पापंन
 सर्वदक्षायाम्यह ॥ ॥ थनलाकपालवस्त्रिविय ॥ उं अ
 कपामुखंसर्वधेमाभामायनूपनन्वाहापगी. महायक्ष्मी.
 सर्वसत्त्वानावपकाकुरु उं अ. कुरुट्स्वाहा ॥ स्वानवाथ ॥
 उं ॐ दायनमस्वाहा ॥ उं यमायनमस्वाहा ॥ उं वसुधाय
 नमस्वाहा ॥ उं कुरुवायनमस्वाहा ॥ उं अ. ज्ञानमस्वाहा ॥
 उं नमोभूयनमस्वाहा ॥ उं वायुधनमस्वाहा ॥ उं ॐ ॐ ना
 यनमस्वाहा ॥ उं उं उं वज्र. ज्ञानमस्वाहा ॥ उं च दायनम.
 स्वाहा ॥ उं सूर्यायनमस्वाहा ॥ उं अ. विपुष्टिधेनमस्वाहा.
 उं ना. ज्ञानमस्वाहा ॥ उं अ. सुप्रत्यनमस्वाहा ॥ उं सर्वादेग
 लाकपालित्यनमस्वाहा ॥ उं वज्रपुष्पपुनिकुस्वाहा ॥ पञ्च
 पचापचास्यापुजसुनि ॥ ॥ उं नमस्कृ. कुरुवाजानांसर्व.
 इक्षुनिवासिनी ॥ ॥ नलाक. वीजयावीरा. दक्षकुरुनमसुन ॥
 उं ॐ दायमहावीरालाकपालामहर्षिका ॥ दक्षदिक्षु.
 स्त्रिमावीरालाकपालनमाम्यह ॥ ॥ थनरमथापचाप.
 समथक्षय ॥ उं नवयसर्वसंयुक्त. स्वाद्यलथि. समन्वितं ॥
 नसयसानि. जप्यमानि ददासिपदसंपदा ॥ लाक्यथ ॥

१७
 पेश्वर्यं समयाचार्य मन्त्रा न समन्वितं ॥ निर्विकल्पक विना
 निरुज्जगो जगद्वसुखं ॥ अथ ॥ हंकायपयमंदव हंकाय
 सिद्धिराजं ॥ हंकायपयमंदव हंकायपयमंदव ॥ मनवि
 य ॥ उदीपायं हनं धानंदीपकालानवपुनं ॥ १५ ॥ यामिप
 जं सार्कं सर्वदुःखमिदं यत् ॥ नायहलं ॥ उं हं धर्मावाह
 गुपुलावाहगुणं नथागतं ॥ हवंदं धर्मावाहगुणं नथागतं
 दिमहाध्वज ॥ ॥ समाकृतं धर्मा ॥ उं वं जसत्तसमय
 मनूपालय वजसत्तननपनिष्ट इष्टाभरुव सुपस्थामरुव
 सुनस्थामरुव अनुपनमरुव सर्वसिद्धिमपयंक्तु सर्वकर्मसु
 चमचिक्तु यं वृत्तु हहहहारावन सर्वनथागतसु वजमा
 भमूक्त वजिरुवमहासमयसत्तवृत्तः ॥ ॥ विज्जजनयाथ
 उं कुत्तवसर्व सत्तार्थ सिद्धिदत्तायथानूपा गक्तु ध्वं वृत्त विषय
 पुनरायगमनायद ॥ उं आ ॥ हं हं निज्जाकाशधनुगक्तु वजम
 धुलविज्जजनम ॥ कारुलपूजा ॥ धूपधनं ॥ रूपावनुजीमन
 धीध्रीवजवागहीदवी आवाहनाय ॥ उं दवजधूपानिर्वाक्या
 मिनमानम ॥ ॥ जाय ॥ आकष्य वादाद्य पूजायाथ
 स्वनवाथ ॥ उं वं वजवागही हं रुद्रस्वाहा ॥ उं हां यायामिनी
 स्वाहा ॥ उं हं माहनी स्वाहा ॥ उं हं हं संवायिनी स्वाहा ॥ उं हं
 हं संकासथस्वाहा ॥ उं रुद्र रुद्र त्रिकायस्वाहा ॥ उं वं जपू

व्यं पनिकुखाहा ॥ पेक्षपवापवास्वसुनि ॥ उं ननाडीवडा
 वावाहीमनुमूर्ति ॥ जिनछपी ॥ अग्रमवपदारीमापयूवीरु
 निवासिनी ॥ ॥ सिद्धमनश्च ॥ उं उद्यानामपचक्रिना
 निरुक्ताविद्युक्ताराखवादाधाविमृगयानेलाक्कमाहिना
 पियूषधारापूमा वृद्धावृद्ध हानपसाविवाविक्रूया मानद
 सिद्धाहवा रावारुव विवापिमा विपहिना जीवदेवावाही
 कापानुव ॥ ॥ यनऊऊमानयागपहस्यदनश्च ॥ ॥ यहस्य
 काथ ॥ विडाजनयाथ ॥ यनगिसमाधिदन ॥ उं नमाडी
 चक्रसम्पदाय ॥ उं समवा हवगुमावृद्धा अष्टावादिहससि
 ना ॥ उं नमाडी चक्रसम्पदाय ॥ थागमृग कलजपानविजुद्ध
 चिक्रपीठादिदहजमननविजुद्धदह जीपीठमधवपम
 धुलचक्रनाथवन्दसदा ॥ गूनुवपजिपसायनन अष्टावादि
 महावाक्क यस्याननु समापिन ॥ वन्दनावडावावाही चक्र
 सम्पदायका दद्यावलीदधिन दहयन्नाविदसदावाजि
 नसर्वगाता ॥ चक्ररुनाथसहजामलावचन्दसदासम्पदा
 गसास नकावाकृमसापानुक्तानीलय पञ्चस्यगइवलनम
 धवलह डाकृधुधवल व्युत्पन्नसर्वात्मक सर्वरू सुविजुद्ध
 नीलय दद्यालयसुन्दर वन्दह सहजामलाववलनिशीस
 हजाइयनायका ॥ ॥ भरीकनूभा मृदिगपुत्रा ॥ उं स्वरा

१७
 वक्षु इति सर्वधर्माणि स्वरावक्षु इति इत्यनाह्वानवक्षु स्वरा
 वात्मका इति इत्यविनाय ॥ पथमननं भवति न पर्वनादो न च
 स्थानं सर्वापि वीतमूकवक्षु इति दक्षिणादिमुखयागीपक्ष
 मुनवर्ति कामुखपरिफ ॥ श्रीहनुक इत्युमासुखमयन
 शीयकापमदयकान् ॥ ६०० नि ॥ ०० नि ॥ इत्युपपुप ॥ नि ॥ उप
 गनवृहक ॥ नि ॥ नक्षत्रिण इत्युपविनाय ॥ ननपञ्चस्क ॥ ६०
 हकापमूपादयन ॥ पुपस्क ॥ चवलाचना ॥ वदनास्क ॥ चव
 जसूर्य संज्ञानस्क ॥ चवदसत ॥ पञ्चनृप ॥ चव संस्कारस्क
 ॥ चवजवाज ॥ विज्ञानस्क ॥ चवजसत ॥ ॥ श्रीहनुकवक्षु चक्षु
 भाहवक्षु ॥ शानयवक्षु ॥ घाभयवक्षु ॥ वक्षु ॥
 नागवक्षु ॥ सपञ्चनासूर्यवक्षु ॥ सर्वायधु ॥ नक्षत्रवक्षु
 पृथिवीवक्षु ॥ याननीआपधु ॥ मापक्षानि ॥ नक्षु ॥ आक
 यक्षीवायुधु ॥ पञ्चनृप ॥ चव आकाशधु ॥ पञ्चदाली
 नी ॥ नक्षत्रधु ॥ यत्नपूदवनाविशुद्धि ॥ हादिस्त्रिण
 पञ्चायधु ॥ विषधदपञ्चपञ्चकक्षु ॥ कापवि ॥ चक्षुसूर्यम
 पुल ॥ नक्षुपविष्काय ॥ नक्षुपविष्मम ॥ दिशुसूर्यम
 रावथन ॥ रुगवन्त ॥ कृष्णवक्षु ॥ भकसुखमिभगा ॥ आलि
 तासनस्त्रिण ॥ महारुपव ॥ कापिनाम्नाकानमान ॥ वक्षुवा
 नाही ॥ आलीगन ॥ ॥ रुद्रदयनवक्षु ॥ यक्षधु ॥ रुद्रामकूटम

धिग ॥ कपालमालाल कुन लोचनं अर्द्धचन्द्राविभं विधव
 जा कान्मभोलिनं विकृताननं दृष्टा कटरीयसंशृंगमया दिव
 सानिनं ॥ व्याघ्रचम्पा निवसनं साधनपक्षिपमालाजनाईध
 रीध ॥ घटमूडा ॥ घटकण्ठिकापुचक्रकुलमयलाजिपामलि
 मयल ॥ अश्लेषाविमलस्मिनि ॥ घटमूडापुकोर्किदा ॥ घट
 पायमिनाविधुधि ॥ घटमूडामुदिन ॥ गम्पगना ॥ रणावनी
 चक्रवर्धु ॥ नकमुरवा ॥ दिग्गजानिभया ॥ मूकवैजानपाघट
 मधुताभयला ॥ वामघजालिगिताकपालि ॥ इष्टमायजिपव
 वा ॥ दक्षिणनर्जयनिदिश ॥ सर्वा इष्टनर्जनीवर्जिका कल्या
 निवन्महानजा ॥ ध्रुवपनी ॥ वृधियमूखि ऊंघाद्वयसमान
 धृष्टा ॥ नायकं महासूखं कनूधमीका ॥ धनन्यासयाथ ॥
 उं श्रीं ह्रीं पुं कां ॥ ३ ॥ उं अकारिण चन्द्रमणुलं ॥ आकारिण सूर्य
 मणुल ॥ उं वं जाप म ह्रीं ॥ हनम द्विस्वाहा ॥ ह्रीं वायट ह
 ह्रीं ह्रीं रुट २ दक्षिण ह्रीं ॥ उं वं हां या ॥ ह्रीं मा ह्रीं ह्रीं ह्रीं रुट २
 वाम ह्रीं ॥ उं हः हृदय नमः द्विल्ललटि ॥ स्वाहा ह्रीं शिपजी
 वायट ह्रीं चंद्रय ॥ ह्रीं ह्रीं चंद्रय ॥ रुट २ सर्वा गच्छ ॥
 उं वं नालो हाया हृदय ॥ ह्रीं मा काल ॥ ह्रीं द्वील्ललटि ॥ ह्रीं ह्रीं
 शिवाया ॥ रुट २ सर्वा गच्छ ॥ अङ्ग यास ॥ धनमनुजाप
 याथ ॥ ॥ उं श्रीं वज्र ह्रीं ह्रीं पुं कां ॥ रुट २ आकिनी जालस

स्वस्वाहा ॥ ॥ धनसावित्री ॥ संवलखनं हायाथ ॥ ३ ॥ खलु
 पाहं रुट ॥ पूषा धिखान ॥ संवा धिखान ॥ ३ ॥ मिष्टवक्षं
 वलि ॥ ३ ॥ वेक्षं मेक्षं ॥ पात ॥ धनमनुपातस्य धनय ॥ ३ ॥
 ॥ मनुकपाटकधुन्यविनावयन ॥ ॥ धन ॥ आकाश
 कपालं च मकाशवापुषी ॥ अष्टादशचक्षुमकमूरवापकव
 धूमिनिनाः खगवाना कुक्ष सर्वकपालकुलिषा धनु ॥ नथाग
 ननथाघधनवमनुवपपदा ॥ १० ॥ टकधनूपाजं च खडांग
 सकमधुलू ॥ धूलमूजलवीनाचगनयनि ॥ धातुयकय ॥ न
 वजोवनपावना ॥ सुखमरासुपसुदपी ॥ हहा ह्रीं हकाप
 हननं वक्षु ॥ हाकापगन्धनाजिन ॥ ॥ ह्रीं कापवी ॥ अहनाचिअमृता
 कापनरुतावयन ॥ ॥ ३ ॥ हहा ह्रीं गपु उमूदा धिखान
 न ॥ ॥ सोमोपो गोवे आं ॥ ३ ॥ खं सुनारुदनी गुह्यवक्षीनी ॥ अमृता
 ह्रीं अखं यनिष्ठु स्वाहा ॥ धन अगुपाहालातिरुखगूनथकाथ
 ३ ॥ नमा दवीवापुषी ॥ अमृता अमृता संतव सर्वसत्त्वानां च अमृ
 तं ह्रीं अखं यनिष्ठु स्वाहा ॥ धूप ॥ रुगावनुर्धामनुर्धाम्नी मनु
 पातकपाटक दवी आवाहनाय ॥ ३ ॥ दवं जधूपनिय्यादया ॥ म
 नमानम ॥ ॥ आप ॥ आकषय ॥ पादाय ॥ पूजा ॥
 खानवाथ ॥ ३ ॥ वंक्षं कपाटकाय स्वाहा ॥ ३ ॥ समयकपाटका
 य स्वाहा ॥ ३ ॥ विस्मयकपाटकाय स्वाहा ॥ ३ ॥ समय विस्मयक

२५
 १०८ कायस्वाहा ॥ ॐ वज्रपूष्यं यमिह स्वाहा ॥ ये वज्रपचापरास्पा
 स्तुतिः ॥ ॐ नीलवर्णा जनीलाला अक्रान्त संगसंगिनी ॥ सक्ता
 हं वामहं वाच अक्रान्त सवमामकी ॥ थन दिग्वधनमक्र ॥ नयः ॥
 ॐ सुमहनी सुमह रुट् ॥ ॐ गुह्य २ रुट् ॥ ॐ गुह्यापय २ रु
 रुट् ॥ ॐ आनय हा रुगवन विद्याना जह रुट् ॥ पूर्वादि कृष्ण
 ॥ धामपकपीत काका ॥ उत्तुका ॥ ॐ ना ॥ ॐ ना ॥
 जमदादि जम इ नि जम इ हनी जममथनी भदनी वजीरव
 वज्रवध ॥ ॐ वज्रपाकाय रुव ॥ ॐ वज्रपंजल ॥ वज्रवि
 गान रुव ॥ ॐ वज्रसपराप गामका वज्रजालानलाका रु
 रुट् ॥ ॐ घघघाटय २ सर्व इष्टान रुट् ॥ ॐ कालय २ सर्वपापो
 न रुट् ॥ ॐ ३ वज्रकीलय वज्रधवा ग्राह्यापय नि सर्ववि
 द्याकायवाक् विह कीलय २ रुट् ॥ ॐ वज्रमूजप वज्रकील
 यमकाटय २ रुट् ॥ महासखली चिन्मथन ॥ जालावली ॥
 वज्रावली पञ्चावली पूनसुमहनीयादी ॥ ॐ मिदिग्वधन ॥
 पूनघटगन्या ॥ ॐ पूष्यपमी ॥ जाललटि ॥ ॐ दक्षिणक ॥
 अक्षिपपुष्ट ॥ ॐ वामक ॥ ॐ नाकम ॥ ॐ चक्र इथा ॥ लावा
 रु इथा ॥ काक इथा ॥ ॐ नय ॥ ॐ गिन ॥ ॐ कानासिका ॥ कं
 वर ॥ लंक ॥ काहदथ ॥ क्षिम ॥ पिंलि ॥ गुगु ॥
 भाउपुदया ॥ सुजयथा ॥ नपादथा ॥ जिपादपुष्ट मपादांग

लया ॥ जांजानूह ॥ ॐ मन्त्रं विंशतिन्या ॥ पी० अपपी० कृष्ण
 पद्मगुह्यपद्मगुह्यः मन्त्रपद्ममन्त्रपद्मः ॐ मन्त्रपद्ममन्त्रपद्मः ॥ मन्त्र
 उं गुह्यं धर्मोदयमन्त्र ॥ कृष्णः ॥ नदनुहदिस्त्रिंशत्कालं
 स्मिन्मूढासुरार्थं शुकनिष्ठैव नस्त्रिंशत्कालं अनादिमीदृशीमनुषी
 धीचक्रसम्पत्तं समादययं शुकवर्धन ॥ पाद्यादिनय ॥ उं ॐ ३
 रूपवसन्ताय पाद्याचमनार्थं परित्यजेत् स्वाहा ॥ उं ॐ वहा ॥ उं
 ग्राः ॥ उं जीवजह हनुका कुरुट ग किनी जालसम्पत्तं स्वाहा ॥
 उं जीहह कुरुट ॥ उं उं उं सर्ववृद्ध ग किनीयवज्रवर्धनीयवज्रकला
 वीय कुरुट कुरुट स्वाहा ॥ मन्त्र ॥ उं ग किनीय कुरुट स्वा
 हा ॥ उं गताय कुरुट स्वाहा ॥ उं स्वधुपाहाय कुरुट स्वाहा ॥
 उं पुपिनीय कुरुट स्वाहा ॥ दिग्मावर्तय ॥ उं वज्रकर्पाटकाय
 कुरुट स्वाहा ॥ उं समयकर्पाटक कुरुट स्वाहा ॥ उं विस्मयक
 पाटक कुरुट स्वाहा ॥ उं समयविस्मयकर्पाटक कुरुट स्वाहा
 दिग्मावर्तय ॥ उं कप २ कुरुट स्वाहा ॥ उं पञ्चधुपाय कुरुट
 स्वाहा ॥ उं कप २ कुरुट स्वाहा ॥ उं चक्षुः किमिय कुरुट स्वाहा
 उं वच २ कुरुट स्वाहा ॥ उं पुनः मन्त्र कुरुट स्वाहा ॥ उं गामय
 कुरुट स्वाहा ॥ उं महानाभाय कुरुट स्वाहा ॥ उं शूरय २ कुरु
 ट स्वाहा ॥ उं वीर्यमन्त्र कुरुट स्वाहा ॥ उं शूर २ कुरुट स्वाहा
 उं स्ववर्धन कुरुट स्वाहा ॥ उं हन २ कुरुट स्वाहा ॥ उं लवर्धनी

कुरु स्वाहा ॥ ॐ उल्काधाय कुरु स्वाहा ॥ ॐ अनाधाय कुरु
 स्वाहा ॥ ॐ अनाधाय कुरु स्वाहा ॥ ॐ यमगादि कुरु
 स्वाहा ॥ ॐ यमदुनीय कुरु स्वाहा ॥ ॐ यमदुनीय कुरु
 स्वाहा ॥ ॐ चण्डभानाय कुरु स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा लक्ष्म
 णाय कुरु स्वाहा ॥ ॐ जालांकुडभानाय कुरु स्वा
 हा ॥ ॐ कर्णविक्रमभानाय कुरु स्वाहा ॥ ॐ अट्टहासभ
 णाय कुरु स्वाहा ॥ ॐ लम्बीवधुभानाय कुरु स्वा
 हा ॥ ॐ धानाचक्रभानाय कुरु स्वाहा ॥ ॐ किलि २
 भानाय कुरु स्वाहा ॥ ॐ सवेनधागनसूतललितविला
 सनमिनः श्रीचक्रसम्पन्नः रुद्रावकायः अर्जुनः ॐ वज्रपू
 ष्यपानिकु स्वाहा ॥ यक्षपवानराणां मुनिः ॥ अगुणरास्या
 ॐ वज्रसूत्रसंगः हक वज्रपत्रमनूतय वज्रधर्मकायवन्न
 वज्रकर्मकृत् कुरु ॥ ॐ वज्रवीर्यः कुरु वज्रवंश ॥ गावक्षां मु
 दरा ॥ द्विवज्रमूर्ध्नि ॥ अजवज्रहा ॥ कुरु वज्रमालिः गाव
 क्षां गीर्णः ॥ द्विवज्रानुग ॥ अजवज्रपूष्यः ॥ कुरु वज्रधूपः ॥ गावक्षा
 लक्ष्मिः ॥ द्विवज्रगन्धः ॥ अजवज्रदण्डः ॥ कुरु वज्रनह ॥ गा
 वज्रधर्मः ॥ अजमश्रु नमामिनभानमः ॥ कुरु स्वाहा वज्र
 हा स्वाहा यः ॥ ॐ टकि २ कुरु ॥ शानुयाय ॥ ॐ नमवक
 सम्बन्धाय ॥ ॐ कुरु वलयदपनीलः ॥ अमूकमालास्वयधामनीलः

महावायुः वेधनवालिः महामदिनीः मधुल वृष्टिहमाः
 चलाशिः परीरुतः पद्मासनाः सिनमाकाकाः पसवर्हिमा
 गः समानुठः गोपाः स्तनद्वंद्वमादविभापयः सूर्यचरादि
 ध्वानकनेवदिनाः ॥ नासिनानेकदेन्याकनः लोकनकाकनः
 सर्वसंकाहनः व्याघ्रवर्मास्वः दुष्कनः दुष्कनः वीरगमूत्रः
 रुंकायः रुंकायः हां हाकायः वापूः सर्वस्वः विधवजाध
 चडाकः ॥ ७५ ॥ ध्वस्तमाहाः चकायः सुगायं महासंकाहनः
 हलवज्रघ्नाः सनाथः पसवाहूः यूरमापं गूठाद्वयह्वानः
 शुभ्रस्वरावगनाल्लेगनः मरुत्तानगजुचर्मावचः ॥ व्याघ्रह
 र्दः दयविस्फुटः पञ्चभूलाद्यः कर्किह्वलनः वज्रखडांगः
 पाञ्चकवज्रमूषुः कृविर्गनपार्श्विनः पुरस्कृतः ॥ ७६ ॥ तमः
 महानासभदाः सिनः ध्यायिनः मालिनः वीधयंथाः ७७ ॥ इव
 कः गिनः पवित्रः नृपूः भवलिः रुचनः पायः धायः संसायः
 कान्तापः सन्नाभिः मानविदापनः ॥ ७८ ॥ विजयः सत्वनमः ॥
 वामहस्तपूजाः ॥ ७९ ॥ उग्राः खभुयः हिङ्गुरुः ॥ ८० ॥ अखलः खहाया
 यः ॥ ८१ ॥ उग्राः ॥ ८२ ॥ चक्रचदनः घटकाः ध्यायः ॥ ८३ ॥ वामकः मारकः
 ॥ ८४ ॥ यत्नावथनः ॥ ८५ ॥ ध्यानः ॥ ८६ ॥ उग्राः यत्नावथनः चक्रपंच
 दनः पद्मापविः हृदयः सूर्यमधुलः वंकायापयिनाः
 भक्तिक्रियायिनाभनः वज्रवायाहीः समामधुलः यत्नावथनः ॥

॥ ज्ञाप ॥ आकर्ष्य पाद्यादि पूजा ॥ स्नानवाथ ॥ उंचवज्रवा
रा ही होस्वाहा ॥ उं हांथायामिन्ध्रस्वाहा ॥ उं क्षोमाहिनीस्वाहा
उं हं क्षोसंवापिन्ध्रस्वाहा ॥ उं रुं रुं संगसन्ध्रस्वाहा ॥ उं रुं रुं
चक्षुकाथिस्वाहा ॥ उंचवज्रपुष्पपुष्पिन्ध्रस्वाहा ॥ स्नानवाथ ॥
उंचवज्रवाही वज्रवाही सर्वपापप्रभाक्षी ॥ मायविध्वंसनी
वी वृद्धत्वरुलदायनी ॥ मय्येन ॥ उं अज्ज ॥ ॐ ॥ उउगुमू
०० ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
किपकपभापससफार्क कानिककिसवीकि हकिस्वपन
मुनघनी विभुगिसर्वदाक्रा विगाभा वामदाक्रा कमलप
निजिपं पकपुष्प धजाया काल्यादलालिकाल्यापविगनसि
पसा मूकमूह विहस्मा मूगुलीमूषिनांगी मूवगलदमृजं रा
डुमूकाननादा सव्यवाह क्रियास्या वपगुलगमना काठमू
लाननानदा सानदा सानूवाग विविधपसयूना मडपयड
नूया ॥ मूदायमूषिनांगी व्यपगवसना धाऊआ दावलागी
सिन्दुरापुष्पदह नूसहपुलायटवीपलीनायका पियास्या
नगमू अवस्वाग कपगानाना विधालांकुना क्षीसम्वाधि
विधाविधानकशगावागहिक्कावज्जिभी सवसिद्धिपदा
यिका रुगवनी दवीनमसर्वदा यामिन्ध्रावल्गुमाहनी
रुगवनी संवापिन्ध्र सर्वदा सवसंक्रासनी ध्वजापवा

समला था गच्छधीचक्षुका चत्वारिंशज्जमक आनन्द
 क्षुता ॥ नीलासिन्धु गोविन्द ॥ ध्यामाधुमसधुमहाछागनच
 रं सदागान्दवं ॥ धुन्यकनूमा त्मान भुक्नुकखेलावक
 दालिनकल्याणिर्गजानमस्तु वज्रयागिनी ॥ यनलिल
 डालखनं हायाथ ॥ ॐ संखादकजूरि विविनुमां ॥ मकू
 टरावना ॥ ॐ ६० दं सर्ववृद्धत्वं यस्याकपूजनाय च ॥
 मकूटपंचकुलाहव सर्ववृद्धन्मजमसिमहामकूटं यनि
 कृत्वा हा ॥ ॥ ॐ संखलखं हायाथ ॥ मकूट ॥ ॐ च
 जधानं छधी अरि विविनुमां ॥ ॐ वज्रवज्री अरि वि
 नुमां ॥ ॐ कर्मवज्री अरि विविनुमां ॥ ॐ कुंगां की
 ख ॥ ॐ नुननु वज्रनुयाहा ॥ ॥ अथादिविषकत्वं
 मसिवृद्ध वज्रा विषकत्वं ॥ ६० दं सर्ववृद्धत्वं गृहव
 दसू सद्यथा ॥ वज्र ॥ ॐ वज्राधिपान्त्वामरिषिवा मे
 ॐ निष्टुवज्रसमयसत्त्वहा ॥ ६४ ॥ ॐ वज्रसत्त्वामरि
 षिवा मे ॥ ॐ वज्रनामा विषकत्वं ॥ ॐ हिं प्रकनामनथा
 गनरुत्तवस्व ॥ ॥ मकूटछापायादि ॥ खानवाथ ॥
 ॐ आर्यवेल्लानायस्वाहा ॥ ॐ अक्रायायस्वाहा ॥ ॐ यत्र
 संख्यायस्वाहा ॥ ॐ अमिनागायस्वाहा ॥ ॐ अमाद्यासिद्धि
 स्वाहा ॥ ॐ वज्रपूष्यं पनिकृत्वाहा ॥ ॐ यत्रायपूजास्तुति

ॐ नमः पंचवृद्धानां श्रुत्वादि कृत्वा ॥ मन्त्रविलासिनं
 नाथं पंचवृद्धनमस्तुते ॥ विदुर्विद्य ॥ नमः ॥ ॐ नमः
 वनवीपवीपधराय हं रुट ॥ ॐ नमः महाकल्याणिसत्रि
 राय हं रुट ॥ ॐ नमः अरामकृताय हं रुट ॥ ॐ दध
 कलाललीकामुखाय हं रुट ॥ ॐ नमः सहस्रमुखसुखाय
 य हं रुट ॥ ॐ नमः पयस्य पाणिगिबुलखडांगवात्रि
 हं रुट ॥ ॐ नमः आद्यचमाम्बुधराय हं रुट ॥ ॐ नमः
 कर्माधकायवपुषाय हं रुट ॥ ॐ नमः अणवगवज्जवावाही
 आर्यपराङ्मनः भुलाकमसि महाविशुद्धी सर्वभूतव
 यावह महावज्र वज्रासत्र अजितश्रुपराङ्मनः वज्रक
 री नमः मभी विषयायभी पायभी छाठभी कलात्रि
 भी संग्रहनी मात्रिभी मूपरादिनी पवाङ्गी विङ्गी
 जम्बुनी नमूनी वज्रवावाही महायागायभी कामयभी
 खड्गयभी हं रुट रुट रुट रुट स्वाहा ॥ ॥ थनमूलसु
 जाययाना मधुल ॥ वज्रवावाही स्वपुपपूजा ॥ आकयभी
 पादाय पूजा ॥ खानवाय ॥ ॐ जाकिनीय स्वाहा ॥ ॐ वा
 लाय स्वाहा ॥ ॐ खड्गवाहाय स्वाहा ॥ ॐ पुत्रिस्व स्वाहा
 ॐ वज्रकपाटकाय स्वाहा ॥ ॐ समयकपाटकाय स्वाहा ॥
 ॐ विस्मयकपाटकाय स्वाहा ॥ ॐ समयविस्मकपाटका

यं कुरु द्रवाहा ॥ उं वं वज्रवापी ही कुरु द्रवाहा ॥ उं हं या.
 यामिथ्ये कुरु द्रवाहा ॥ उं हं मीहिनी कुरु द्रवाहा ॥ उं हं हं
 संवापिथ्ये कुरु द्रवाहा ॥ उं हं हं संगसनी कुरु द्रवाहा ॥
 उं रु २ वसुकाय कुरु द्रवाहा ॥ उं वज्रपूष्यपगिकुखाहा.
 पेक्षपवापपूजासुनि ॥ उं सर्वकुरु न संदह अगदर्थपवा
 दक ॥ किन्नामसि विवद्वंशीरम्वनमाम्पहम् ॥ उं नन्वा
 वज्रवापी ही मन्त्रमूर्ति जिह्वी शूयन् वज्रदा रिमानक
 विदुनिवापिनि ॥ ॥ वामशुलथिथ ॥ सिद्धसिद्धि
 ऊऊकाकाथ ॥ खाकाथ ॥ समय जा थ मनविथ ॥ नाय
 हल्ल ॥ ॐ निगिसमाधिमहायागध्वन ॥ समाप्त ॥ ॥
 थनगिसमाधिवली ॥ ॐ वज्रमावलिहायक ॥ उं आः कं
 वली शूय विरावथन ॥ यं कायं वायुमशुलं यं कायं अग्नि
 मशुलं ॥ कं कायं निमशुलं आकायं पन्नराजनं ॥ नम
 रुकादिकं ॥ उं हं हं हं हं यं मां पां नां कं ॥ नदधिष्टिन
 पं वासुन पं वपदीप हं हं हं हं कायं यथा क्रम पवून
 गन्धर्वं दविष्टनदृष्टा ननु पातालसर्वं हं सवा ॥
 मूरवामुत्तमय ॥ ॐ कुरुवद्वान विविद वनुपासुन ॥ न इपावि
 आकायं च दिकं उं आः हं वस्मिनि सर्वगथागनादि
 गावाधिविन्नासुन सागयादिन अमृतामाकृष्य कर्मना विवि

नमवलाकथन ॥ ॥ आकथय पायादि पूजा ॥
 वालिखानवाय ॥ अष्टमागुकाखत्रपंपूजायाय ॥ ॐ नमो दि
 गवलिसमाफ ॥ ॥ चनकलपूजायाय ॥ आवाहन
 याय धुआनावाय ॥ ॐ गगन श्रीमगूर्ध्वी कल
 विद्यधन महाकाल आयुवादि पंचगामा श्रीमश्री
 वंशानन सगल्य आवाहनाय ॥ ॐ देवदुपत्रियान्
 यामिनमानम ॥ ॥ निलाङ्गनयाय ॥ उग्राः स्वधुपा
 हं विद्यामकृम उं सर्वविघ्न ह्य २ हं रु द्वाहा ॥ चल
 पागजा ॥ उग्राः स्वधुपाहं हं सर्वविघ्न ह्य २ हं रु द्वाहा ॥
 हं रु द्वाहा ॥ ॐ दकस्य ॥ उग्राः स्वधुपाहं हं रु द्वाहा ॥
 विघ्नमज्ञानपन हं रु द्वाहा ॥ ॐ कृष्णवक्त्र ॥ उग्राः स्व
 धुपाहं हं सर्वपाप विघ्नमालारु सिक्क हं रु द्वाहा ॥
 ॥ सवय ॥ उग्राः हं रु द्वाहा ॥ हं रु द्वाहा ॥ हं रु द्वाहा ॥
 हं रु द्वाहा ॥ ॐ रु द्वाहा ॥ उग्राः स्वधुपाहं हं रु द्वाहा ॥
 पुन्यहान सगवाथाय २ हं रु द्वाहा ॥ जाव ॥ उ
 ग्राः स्वधुपाहं हं रु द्वाहा ॥ हं रु द्वाहा ॥ हं रु द्वाहा ॥
 हं रु द्वाहा ॥ ॐ रु द्वाहा ॥ उग्राः स्वधुपाहं हं रु द्वाहा ॥
 हं रु द्वाहा ॥ ॐ रु द्वाहा ॥ उग्राः स्वधुपाहं हं रु द्वाहा ॥
 हं रु द्वाहा ॥ ॐ रु द्वाहा ॥ उग्राः स्वधुपाहं हं रु द्वाहा ॥

ॐ आपमित्रादीकल्याणमध्यकल्याणपुत्रसामिकल्या-
 नस्वर्थं स्वयंजनः कवलं पतिपूज्यं पश्येवदानं वृक्षच-
 र्यं संपदाशयमिस्मः ॥ स्वानंदवनयः ॥ मुष्टासवार्थं सिद्धि-
 विमनसुमनसु मङ्गलवाधिसत्त्वः ॥ ॥ वज्रस्थितः ॥
 ॐ स्वानंदवनयः ॥ ॐ वज्रनंदः ॥ ॐ वज्रामृता ॐ ॐ स्वा-
 हा ॥ आकवक्षः पादोद्यः ॥ पूजा ॥ स्वानंदाय ॥ ॐ आप्य-
 कलाचिनाय स्वाहा ॥ ॐ अक्षय्याय स्वाहा ॥ ॐ चक्रसंगवाय-
 स्वाहा ॥ ॐ अमिताभाय स्वाहा ॥ ॐ अमाद्यसिद्धिस्वाहा ॥
 ॐ अलाचिनाय स्वाहा ॥ ॐ आमकीय स्वाहा ॥ ॐ पाशुनाय स्वा-
 हा ॥ ॐ आप्यनामाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रपूष्यपनिष्ठ स्वाहा ॥
 गच्छ ॥ ॐ गंगायामिथ स्वाहा ॥ ॐ गच्छधनाय स्वाहा ॥
 ॐ गच्छपनिष्ठिनाय स्वाहा ॥ ॐ रत्नदानाय स्वाहा ॥ ॐ
 वज्रपूष्यपनिष्ठ स्वाहा ॥ ॥ महाकाल ॥ ॐ महाका-
 लाय स्वाहा ॥ ॐ कृष्णाय स्वाहा ॥ ॐ कृष्णलाय स्वाहा ॥
 ॐ कृष्णलाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रपूष्यपनिष्ठ स्वाहा ॥ ॥
 ॥ रमा ॥ ॐ आयुवृद्धिस्वाहा ॥ ॐ अक्षयवृद्धिस्वाहा ॥
 ॐ पुष्पावृद्धिस्वाहा ॥ ॐ धनवृद्धिस्वाहा ॥ ॐ सन्मानवृ-
 द्धिस्वाहा ॥ ॐ वज्रपूष्यपनिष्ठ स्वाहा ॥ ॥ गंगायामि-
 ॐ नदाय स्वाहा ॥ ॐ रत्नाय स्वाहा ॥ ॐ अयाय स्वाहा ॥

३३
 उं शोभ्याय स्वाहा ॥ उं कपिलाय स्वाहा ॥ उं वज्रपूष्यपनिष्ठ
 स्वाहा ॥ ॥ इत्येकं सिद्धाम् ॥ उं श्रीलक्ष्मीय स्वाहा ॥
 उं श्रीलक्ष्मीश्च न निवादिनी स्वाहा ॥ उं श्री स्वाहा ॥ उं वज्रपूष्य
 पनिष्ठ स्वाहा ॥ मम ॥ उं वैष्णवाय स्वाहा ॥ उं मानसदा
 य स्वाहा ॥ उं प्रमदाय स्वाहा ॥ उं पूष्यदाय स्वाहा ॥ उं धन
 दाय स्वाहा ॥ उं नञ्जनाय स्वाहा ॥ उं वज्रपूष्यपनिष्ठ स्वा
 हा ॥ पञ्चापवाय स्वाहा पूजासुते ॥ उं नमस्तु पञ्चवृद्धये
 अकालादि कलत्राय ॥ मध्यवर्त्तनाथं च वृद्धनमस्तु ॥
 ॥ गणेशाय ॥ उं विष्णवे वायवीयाय वीष्णवे वायवीयाय नमः ॥ सर्व
 विघ्नहर्त्रे नमः ॥ धिपनमस्तु ॥ ॥ महाकाल ॥ उं
 कृष्णवर्त्तु समानुठ वृद्धाय सकलकृष्ण ॥ कवनिकपाल
 धननाथ महाकाल नमस्तु ॥ सगर्वो ॥ उं आयुवृद्धि
 य ॥ वृद्धि वृद्धि पद्मासूखस्थ ॥ अविनाशधनं अत्र गुण
 सन्नात संतुर्न सफ वृद्धिस्तु ॥ पञ्चगामाया ॥ उं नदारा
 डाज्या सोम्या कपिलावक्रपावति ॥ पश्चिद्विषमहालक्ष्मी
 आयुवायाग्यसंपदं ॥ लक्ष्मी ॥ श्रीलक्ष्मी महादेवी सर्वसं
 पत्तिदायिनी ॥ सर्वकाम प्रदायिनी श्रीलक्ष्मी नमस्तु ॥
 ॥ मम ॥ उं पूष्यसंवीर्यसंज्ञानं वैष्णवम् ॥ महाकाल ॥ वैष्णव
 नमस्तु सर्वसंपत्तिदायिनी ॥ स्मरन्ताय ॥ ॥ ॥ स्वा

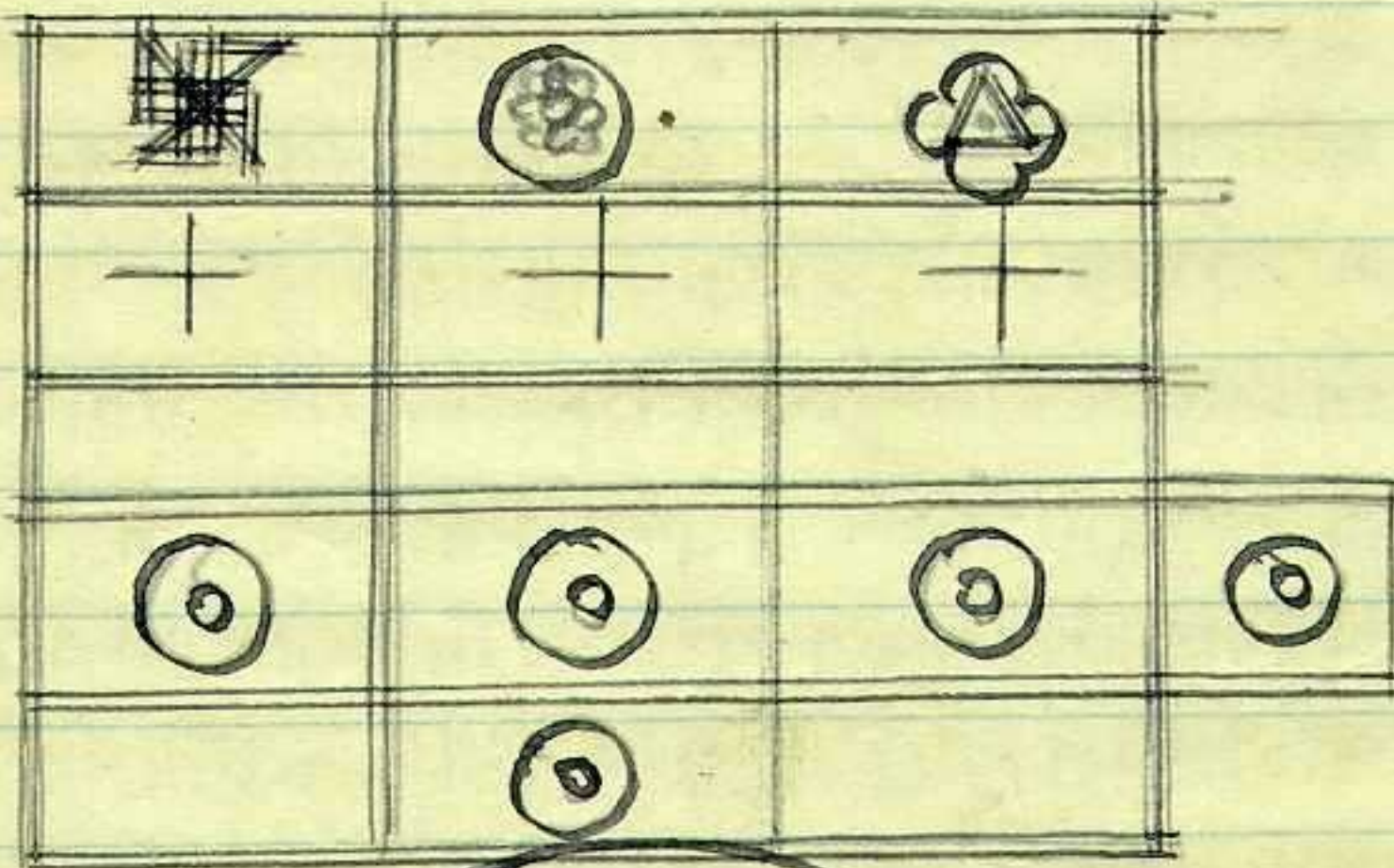
३०/१

मनविषयः॥ नायकालः॥ हवस्मावाहगुपलावाहगुनषा
 नधागनः॥ हवस्मावाहगुपलावाहगुनषा
 नः॥ ॥ कलउपूजासंपूर्णः॥ ॥ ॥

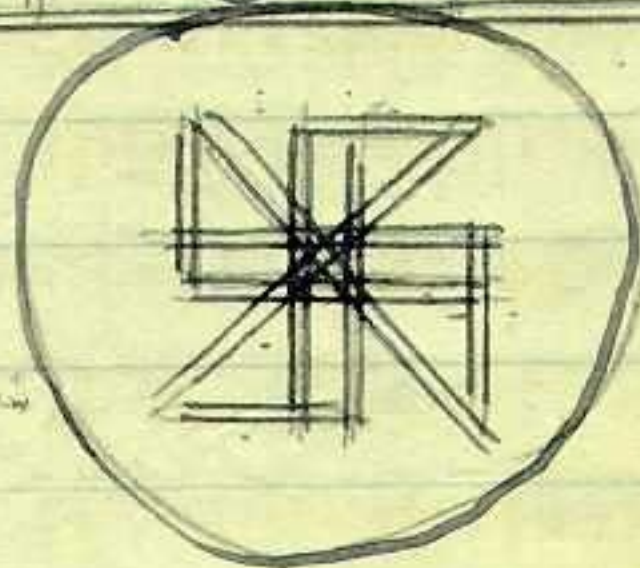
गागस

चय

मन



वि



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ अथ पितृ क्रिया विधि ॥

द्वायाङ्क १ पूज्यारुल ॥ सिद्ध मासू सिद्ध ऊजका खान
 पक्ष्याणां उच्छाखां ॥ धर्मां अस्मां इच्छा सिम्हारुल क
 नामु जवा ॥ जव वाकुमधि धर्मा हामि पंचामृग साडन
 आस्था नाय पाना पुलालपन ॥ नगपाऊ ॥ शिलाय
 र्यं छा ला ध अरुपला ॥ गगगाय सूकसु ॥ धव डि
 आगवा शे मिथीलंग ॥ गगमसियाला थूलिपिमुया
 ऊलमाल ॥ ॥ थन क्रिया पिमुसालादयक ॥ ॥

धनसूर्यार्घ्याय ॥ उग्रचमनं पणिकुखाहा ॥ हृदयस्वाहा ॥
 क्रांस्वाहा ॥ कायविष्णुधनस्वाहा ॥ पादोपकालनस्वाहा ॥
 धक्रिनार्घ्यपणिकुखाहा ॥ सूर्ययानमिहलंनिष्क ॥ श्रीसूर्या
 यनकचभुननमः ॥ श्रीसूर्यायनकपूर्यनमः ॥ स्वांजाकि क
 यासिननय ॥ उमभीधनीवक्षानीमहापदीसय ॥ श्रीय
 नक२मांउग्र ॥ ईरु ॥ स्वाहा ॥ र्वा ॥ जाकि ॥ कडाहमाविथ
 अशकाय ॥ उनभावूहाय ॥ उनभाधम्माय ॥ उनभासंधा
 य ॥ धायष्क ॥ मूयनयनयविनाऊमान ॥ श्रीष्ठाक्कसिह
 नथागनयर्ष्यायां ॥ लदकल्प ॥ सहनामलोकधनी ॥ ववस्वम
 चक्रय ॥ सन्धनमादापनार्क ॥ कलियुग ॥ पथमचय ॥ अरुन
 स्व ॥ उरुयपाचाय ॥ हसवत्याद ॥ वालसूकीकृण ॥ उपरुद्धा

पी०० आर्यावर्तपुष्पदन्तो कर्कोटक नागवाजासमथ नागवा
 साविधमहादूत श्रीसयंमूर्ध्वगच्छाने श्रीगुह्यध्वनीपद्म
 पापमिनाधिशिष्टे श्रीमङ्गलधियाधिशिष्टे श्रीमो नपाल
 मधुल श्रीसम्पदाकालमधुल सुदुर्जयादमी समीप
 मधिलिङ्गध्वन गाकध्वन कीलध्वन कूम्भध्वन ग
 र्भध्वन रुक्मिणध्वन गन्धध्वन विक्रमध्वन अष्टक
 नागपत्रिवृत् ॥ वागमनि कञ्जावनी मसिमनी पुत्रावनी
 महानदी पवाहिन पुष्पनीथि धामनीथि अंकुशनीथि
 राजनीथि मनापथनीथि निर्मयनीथि निधाननीथि सु
 तनीथि विनामसिनीथि पुमादनीथि मूलकृष्णनीथि
 ऊयनीथि उपनीथि परीवृत्त ज्ञानमणिव अश्वान्न
 रुक्माव धामाव वगुपाकावे सफमूल्याधिशिष्टे वज्र
 थागिनी गन्धगुनि अष्टमागुकाष्ट भव सिद्धिनी व्या
 धिनी गन्धकृमाव महाकाल हावनी हनुमन् दह
 काठ पत्रिवृत् नगनपालमधुलांगनगत श्रीमदाय्या
 वन्ताकिर्ण ध्वनविजयनाथि ॥ अथयुष्टिराममध्व य
 थात्राम सम्पन्न सय यथाभास यथानिधि यथानक
 न यथायाग यथाकर्म यथामुहूर्त यथावाग यथा
 सूर्य यथावामी वन्दुमसी दानपनि ऊजमानस्य न

॥६॥ निर्मिममथा ॥ संगमिसंगमि ॥ अधवविघ्नमपनजायगा
 उं ऊवावू समसंकाशं काशपपयं महाद्युति ॥ गंमोपि सर्व
 पापं प्रथमामि दिवाकनं ॥ थूलिकर्मयायन रुपिमाकि
 धायर्क्ष ॥ अथ काय ॥ गुणपादाद्यनय ॥ पूजाराजन
 र्क ॥ गुणमधुलदनर्क ॥ लाकपालवलिपूजा धूनकाशि
 सनाकप्रवाना विसर्जनयाय ॥ थूलिधूनकाशि ॥ कावलास
 कूल १ आकि ॥ कूल १ वज्रि ॥ कूल १ क्व ॥ सा इतू पंवा
 मुन हामा साधो साध्या र्कया वाकुमधि कूछा ॥
 थूलिनयाशि ॥ ॥६॥ धनयाय ॥ मनु ॥ उं नमो रागवर्गस
 वे दुर्गानिययि ॥ ॥६॥ धनराजाय नथागनायां हर्षं सम्पदसं
 वृद्धाय ॥ नयथा ॥ ॥६॥ धन २ वि ॥ ॥६॥ धन २ सर्वपापवि ॥ ॥६॥
 धनरषाहा ॥ कवला रक्ताशानिहना ॥ पूर्वस्वकाशि अथ
 काय ॥ उं मिलादुन्यनिमूछानवकुलानवकुल ॥ नया ॥ ॥
 मधुना नासिकावाहु ॥ क्रीयादास्याद्युभादनं ॥ दधिवक
 रिजानूत्यां नाथन हस्तपादयाः ॥ अत्रादो सर्वजागानां
 जायन वाधिविर्यवानः ॥ ॥ कूछानंउल ॥ अत्रास्वज
 कूछाग्नि मधुसर्पि मिलनथा ॥ दधिरवधुपनाषा
 का अष्टाङ्ग पिशुसंरुवा ॥ धनआकि निनर्क ॥ पिशु
 दानअहकनामि धायर्क्ष ॥ धनद्रायर्क ॥ पिशुना

ग। क्रियर्कः॥ पथमर्वाधर्मधनुर्वागीधुवाय। पितृरागं
 स्वाहा॥ उं बुद्धपवितांमह यथात्रामन पितृरागंस्वध
 उं बुद्धपवितांमह यथात्रामन पितृरागंस्वध॥ उं पितृम
 हयथात्रामन पितृरागंस्वध॥ उं स्वपितायथात्रामन
 पितृरागंस्वध॥ उं विकृताय पितृरागंस्वध॥ थन
 पितृकाय॥ सद्यमांगगदसथन॥ हामलंहायाय॥
 नाहावायर्कः॥ थन चण (गण)स मन थूलियाग कू
 आसनमथ॥ वाक्क॥ अथादि॥ यथान नथागता यो
 पूर्वगमय स्वपवितापिता दक्षिण रीमुख पितृयित्वा
 विपश्चिन्नादवनाया विरिन्ना विरिन्ना सुध॥ कृकृकृ
 द्वा पयन्नाया दवनाया महावला कक्षकाक स्यद्व
 दा क्षीमन्काष्ठप स्यचपयन्ना क्षाक्कसिंहस्य वृक्ष
 दागिदक्षधवा ननदवपमुखानां उं दमासनमाङ्गिना
 अयं धर्मधनुर्वागीधुवाय कृष्णसन मूपनिष्ठितां॥
 पञ्च॥ गणाय कृष्णसन मूपनिष्ठितां॥ उं वक्षानवाय
 कृष्णसनमूपनिष्ठितां॥ पुलालपनलाय॥ उं वसुधवी
 पणपनिष्ठितां॥ लंवनंहायाय॥ उं अरिचिन्नाय
 स्वाहा॥ स्वांजाकिनथ॥ उं सुपुष्पस्यस्वाहा॥ नाहानि
 नवागावनायाय॥ उं अधिपणपनिष्ठितां॥ थनचण

यागपंचामृतनं ॥ ललाटाङ्गनकं ॥ अक्ष ॥ वाक् ॥ ॐ यथा
 पूर्ववाधिसत्त्व चर्यायां चरति मातापितृ पूर्वाभय सफ
 पुरुषस्य सफ निधयस्य युष्मन्विषयार्थ गोक्तमनादि
 स्य ॥ अस्मन्धायक ॥ यजमानस्य नमनं दुवा सतिना सद
 धिसद्युन समधु सखधु सर्वापकय सहिनाय यादिसं
 धपयकामि सकृत्तार्थ नधुलपयकामि अयं धीधर्मका
 गुवाणीधवाय सूपनिष्ठिनवदस्वाहा ॥ ॐ पंचगामाता
 यसूपनिष्ठिनवदस्वाहा ॥ ॐ वेदानवाय सूपनिष्ठिनवद
 स्वाहा ॥ ॥ इति स्थापन ॥ चेत्ययाग गगनास मन
 याग स्नानयक्षि ॥ ॐ यत्तंगलं सकलसत्त्व हृदि स्थितस्य
 सर्वात्मकस्य सर्वकलाधियस्य त्रिषायसत्त्व अनकस्य
 महासुखस्य नत्तंगलं तवगुण ययमाश्लिष्यक ॥ ॥
 सा इवूनस्नान ॥ उलम्ब्रीधनको अनपवनात् भुक्ताय्यत्राय
 गिमिलं यहीन ॥ वृक्षाविवृक्षावृजपगुनं नत्तंगलं तवगुण
 ययमाश्लिष्यक ॥ पंचामृतनस्नान ॥ सतिलासद धिसद्युन
 समधु सखधु सर्वापकय सहिनाय त्वदुपयकामि
 लखकुगुनय ॥ ॐ पूज्य महापूज्य अपुत्रमिगपूज्य अपुत्र
 मिनायुपूज्य हूनसंताप यचिह्न ॥ ॐ सर्वसखायाय
 यचिह्न धर्मगर्गगाय समूर्ति खलावविह्नि महान

५३
यययिवायस्वाहा ॥ ॥ असकंकेन ॥ उं पणि विम्वस
माधर्माज्जाह्वा ॥ इलाविला ॥ अगाय अन्कपावहगु
कर्म समूहव ॥ अरिथककाय ॥ चैपथियाअमय ॥ उ
नमो रगवर्ग पत्रकंगुजाजाय गथागनायां हनसम्पकस
वृद्धाय ॥ गयथा ॥ सुख २ ॥ अर्न २ दान २ अमापस्व गपस्व
महामर्ज निलात्मन् निलाकल निला ॥ सर्ववृद्धानां धि
ष्टिगस्वाहा ॥ अयाय ॥ पादार्घमय ॥ खानवाय ॥ उं आर्य
वैलाचिनायस्वाहा ॥ उं अरुत्तायनमस्वाहा ॥ उं पत्रसंर
वायनमस्वाहा ॥ उं अमिनागायनमस्वाहा ॥ उं अमाघ
सिद्धयनमस्वाहा ॥ उं आर्यमायायनमस्वाहा ॥ उं पायना
यनमस्वाहा ॥ उं पाशुनायनमस्वाहा ॥ उं मामकीयनम
स्वाहा ॥ उं वज्रपूष्यपनिष्ठस्वाहा ॥ ॥ गगनसयाम ॥ उं नन्दा
यनमस्वाहा ॥ उं रदायनमस्वाहा ॥ उं अयायनमस्वाहा ॥
उं सोम्यायनमस्वाहा ॥ उं कपिलायनमस्वाहा ॥ उं वज्र
पूष्यपनिष्ठस्वाहा ॥ मगयाम ॥ उं वध्वानवायनमस्वाहा
उं मानिरदायनमस्वाहा ॥ उं पूरु रदायनमस्वाहा ॥ उं
धनदीपायनमस्वाहा ॥ उं वज्रपूष्यपनिष्ठस्वाहा ॥ थन
धुं कलामय ॥ उं ६६ दमपयमंगंधं वविमं पापनाशनं ॥
आपदाहयनं निग्यलत्री गिस्वस्तु सर्वदा ॥ सिद्धमिर्क ॥

ॐ चन्दनसिद्धं पूज्यं पवित्रं पापनाशनं ॥ आपदाहरणं विघ्नो-
लक्ष्मीस्थिपंशु सर्वदा ॥ ऊँका ॥ ॐ अयं पञ्चमं वसु-
सहस्रायामिनीमथा ॥ यद्वापुर्वीनायकमुपददासि पञ्चमं पदा-
॥ खानच्छाय ॥ ॐ मावर्गीमाधिवीजानि मादायव चंपकादिभि-
रुत्पादिपुष्पासंयुक्तं ॥ हनपुष्पमालिका ॥ ॐ वज्रच्छाय-
ॐ दधिवक्त्रं अन्नदानपायमिना पूजामघ समुद्ररुल्लनसम-
यह ॥ रुल्लरुल्ल ॥ ॐ लंगमव ॥ ॐ कुमालदालिंबगिरि-
लादय ॥ कर्कगिरिगुननालंगनानिरुल्लक्षयम् ॥ धूप ॥
ॐ धर्म २ धूपध्यानपायमिना पूजामघ समुद्ररुल्लनसमय-
स्वाहा ॥ मग ॥ ॐ झल २ झलय २ दीपदानपायमिना पूजा-
भघ समुद्ररुल्लनसमयस्वाहा ॥ नायनपूजा ॥ ॐ शक्ति २
शीलपायमिना पूजामघ समुद्ररुल्लनसमयस्वाहा ॥ आस्था-
लक्षय ॥ ॐ मूत्र २ महामूत्र सूर्यावर्णामनुगाकुक्षु स्वाहा ॥ स्ना-
नयाय ॥ ॐ नमस्ते पंचवृक्षाय अक्रायादिकुलगुय ॥ मध-
वपावननाय पंचवृद्धनमस्तुभ ॥ ॐ नदाम्बुजाज्याशोम्या-
कपिनाचकृपावनिः ॥ पश्चिमसु महालक्ष्मी आयुवाधाय-
संपद ॥ ॐ पूज्यं वीजसंज्ञातपीनवर्जं महाझलं वेष्ट-
नलमहवर्ध सर्वसंपादिदायकं ॥ सकल्प ॥ ॐ ऊँकादीमा-
नसंकल्पनासिद्धिस्तु ॥ थनपूगिकानकारवायकं ॥ कृष्णं

गुरुकायिकं ॥ पुनिकायानकूडासनमथ ॥ श्रुत्यादि ॥ यथानि
 तथागतायां पूर्वगमन्यः भाषयिष्यामिनादक्लिष्टाभीमुखपिष्टु
 यित्वाविषद्विधादवनायाः शिखिवाविषद्विधुवस्रध ॥ कृकृ
 रुदपसत्रायाः दवनायामहावला कनकाकस्यदवदाष्टमिन्
 काष्ठपसत्र पसत्राः ॥ ६॥ कसिंहस्य वज्रदागिदगधवा नम
 दवपमुखानां मिदमासनमाहिनां ॥ वृद्धपपिनामहयथाना
 भनः कूडापुनिकासूपनिष्ठनां ॥ यविनामहयथानामनकूडा
 पुनिकासूपनिष्ठनां ॥ पिनामहयथानामनः कूडापुनिकासूपनि
 स्थनां ॥ पिनामहयथानामनः कूडापुनिकासूपनिष्ठनां ॥ नि
 लादकविय ॥ १॥ गोकुमगागः वृद्धपपिनामहददकूडागि
 लादकाद्यस्वध ॥ १॥ गोकुमगागः पुपिनामह ॥ १॥ दकूडागि
 लादकाद्यस्वध ॥ १॥ गोकुमगागः पिनामहददकूडागि
 लादकाद्यस्वध ॥ १॥ साडुविय ॥ ३॥ कंकनि २ भावनी २ भाव
 नी २ भावनी २ पुनिहगय कवियस्वध ॥ पंचामुनाविय ॥
 उंसानियाय सदधि सद्युनः समधूसखसु सवापकनय
 सहिनायस्वध ॥ लखविय ॥ ३॥ पुन्य २ महापुन्यः श्रुपन
 मिनपुन्यः कानसंगभायकयंकवियस्वध ॥ चमनानिध ॥
 उंचदत्रचदत्रादिवलपालमिनापूजामघः समुद्रल
 नसमयस्वध ॥ ३॥ ऊजंकानय ॥ ३॥ सर्वाविन्सर्वापायाविष्ठा

५०
 धनीवृद्धालकाजयशुपवीतायडीलपायमितापूजामघ.
 समुद्ररुलनसमयस्वधा ॥ गंगाजीउ ॥ लिंगपाऊकाय ॥
 उ गंगापाऊपूष गंगापाऊमथेक्व. विचित्रपूषदानपाप.
 मितापूजामघसमुद्ररुलनसमयस्वधा ॥ धोवडि काय.
 उंदाधिवक्कजुत्रदानपापमिता. पूजामघसमुद्ररुलन.
 समयस्वधा ॥ रुलरुल ॥ उलंतामधुंरु दालिस्वति
 रुलादय. कर्कनिचुननालंग. नतानिरुलकायथन ॥
 ॥ धूप ॥ उंवेम २ धूपध्यानपायमिता. पूजामघ. समुद्ररु
 लनसमयस्वधा ॥ मन ॥ उं दीजापापकल २ कालय २ दी
 पदानपापमितापूजामघ. समुद्ररुलन. समयस्वधा ॥
 ॥ गालनहल ॥ उंजाऊ २ डीलपायमितापूजामघ. समु
 द्ररुलनसमयस्वधा ॥ आयातकथ ॥ उंमूनि २ महामूनि.
 सुखावन्नामनुगाऊरुस्वधा ॥ शानुयाथ ॥ उंनमरुड
 कडीहाय. धर्मवक्क. पुवर्कम ॥ गेकागुक्क उगात. स्वाधि.
 ॥ धयंसर्वदुर्गति ॥ संकल्प ॥ यथा दीमान्न. अन्नं संक
 ल्पाना सिद्धिस्तु ॥ स्वर्गलाक संपाद ॥ ॥ थनपिण.
 यातकुडमनथ ॥ वाक्क ॥ यजमानस्य. गोकमगागिर्य.
 यिमनादडा. गिपक पिणुदावावधकर्म ॥ यथाभि. गथा
 गनायां. पूर्वगमस्य. सापनिपाजिता. दाकिष्मकीमुखपि.

२७
 सुयिन्नाविपश्चिन्नादिवनाया महावला कनकाकस्यदवदा
 क्षीमत्काष्ठपत्रपुसना ॥ अक्कसिंहस्य वृक्षदागिद ॥ अज्यना
 नम दवपमुखानां मिदं मासनमाक्षिनां ॥ वृक्षपिनां महयथा
 नामनपिंशुयकृष्णसनमूपनिष्ठिनां ॥ पुपिनां महयथानाम
 नपिंशुयकृष्णसनमूपनिष्ठिनां ॥ पिनां महयथानामनपिंशु
 यकृष्णसनमूपनिष्ठिनां ॥ सापिनादिउगनयथानामनपि
 शुभयकृष्णसनमूपनिष्ठिनां ॥ पुलालपर्मलाय ॥ उवसूध
 विपनपानिस्वधा ॥ लखनंहायाय ॥ उज्जुमिषिचनित्यस्व
 धा ॥ स्वांजाकिनय ॥ उमृपुष्पस्य स्वधा ॥ मल्लारवनायाय
 उज्जुधियनपाण्यस्वधा ॥ थनपिंशुवजायान पंचासृगन
 ॥ लाउ ॥ दानक ॥ वाक्क ॥ दानपानिकाय ॥ यजमानस्य ॥ गुरु
 म ॥ गुरु पिनुदक्षानिपकृ पिनुदानार्चय ॥ क्रियाकर्म ॥
 यथापूर्ववाधिसत्त्वचर्यायां चपनि मागापिनृपूर्वगमस्य
 सफ पूष्यस्य सफनिष्ठस्य युष्मन्विधा ॥ गुरुम
 ॥ गुरुम ॥ अस्मन्धार्यकं ॥ अस्ममेन यजमानस्य ॥ नम
 नडुला सगिला सदाधि सधृन समधु सखधु सर्वाप
 कस्य सहिमाय यदिसंघ पयच्छामि सकृन्नाथ नड
 ल पयच्छामि अयंवृक्षपिनां मह यथानामन पिनुसू
 यनिष्ठिनां ॥ पुपिनां मह यथानामन पिनुसूपनिष्ठिनां

४
 पिनामह यथानामन पिशुसूपनिष्ठिनां ॥ आपिनादिउं -
 गनयथानामन पिशुसूपनिष्ठिनां ॥ गिलादकविय ॥ (गो
 रुम (गतिर्य वृद्धपिनामह यथानामन ॥ दकूछागिला
 दकंस्वधा ॥ (गोरुम (गतिर्य वपिनामह यथानामन दकूछा
 गिलादकंस्वधा ॥ (गोरुम (गतिर्य पिनामह यथानामन
 दकूछागिलादकंस्वधा ॥ (गोरुम (गतिर्य आपिनादिउंगन
 यथानामन ॥ दकूछागिलादकंस्वधा ॥ साडुविय ॥ (उं
 कं कनि २ पावनी २ गावनि २ भावनि २ पानि हनकयंकनिय
 स्वधा ॥ पंचामुगविय ॥ (उं गिला सदधिसद्युग समधु
 सरक्षु सर्वापकनसहिनायस्वधा ॥ लंवाविय ॥ (उं पुन्य २
 महापुन्यमुपमिगायपुन्य शून संलायायकयंकनीयस्वधा
 ॥ खानमालानय ॥ (उं पिशुकावस्वधा ॥ सिद्धलंनिर्ध ॥
 उंचदनंचदनानि वनपापमिनापूजामघ समुदरुल
 नस्वधा ॥ ऊं ऊंकाष्ठाय ॥ (उं सर्वविनसर्वापाय विल्लाधनि
 वृद्धालंकाययद्धा पवीताय लीलपापमिनापूजामघस
 मुदरुलनसमयस्वधा ॥ नंगराऊरिमवाऊष्ठाय ॥ (उं न
 गराऊपुष्पं नंगराऊनथे वचविचिनुलीलपापमिना पूजा
 मघ समुदरुलन समयस्वधा ॥ (धोवजिष्ठाय ॥ (उं दधि
 चक्षाशून दानपापमिनापूजामघ समुदरुलन समय

42

स्वधा ॥ रुल रुल रुल ॥ उलंलामधु ॥ नानदा लिं व निरु
 लादय ॥ कर्कनि चूगनालंग नानानिरुल धासथन ॥ धूप ॥
 उधर्म २ धूप धानपापमिना पूजामघ समुद्ररुलनसमय
 स्वधा ॥ मन ॥ उं दीं ज्ञावाक्क झल २ झालय २ दीपदानपाप
 मिना पूजामघ समुद्ररुलनसमय स्वधा ॥ नायनं हलि ॥ उं जा
 अ २ शीलपापमिना पूजामघ समुद्र रुलनसमय स्वधा ॥
 ॥ आश्वालेकय ॥ उं मूत्र २ महामूत्र २ सुखावन्मांसनुगकुं रु
 स्वाधा ॥ शान ॥ उं नमस्क आक्क सिंहाय धर्म चक्र पवकन
 न्धकानुकुजगन्धामि ॥ अधयन सर्वदुर्गनि ॥ ॥ संकल्प
 यथादीमान संकल्प सिद्धिचक्र ॥ उरुपिंरुशसहिचक्र ॥
 विकलशक्ति ॥ अयादि ॥ वाक्क ॥ उं यथा पूर्ववाधिसत्त्व
 चर्यायांचयलि मानापिनु पूर्वगभय सफपुत्रुधय ॥
 सफनिधाय युष्मन विधाजन्मर्थ गोरुम गोरुनय अस्म
 न्धायर्क ॥ अस्मन यजमानस्य ननं नडला सनिला
 सेदाधि सधुन समधू सरक्तु स्वापकनय सहिनाय
 यदिसंघ पयच्छामि सकृन्नाथ नमुल पयच्छामि ॥ यथा
 रिमंकुलजाना अपुगाकाय वांधवा आत्मगर्भा विनुपा
 कृष्णगर्भान कुलमम समोदकनगृप्यं ३ गृप्यन्नायाप
 ना गानि सखान हीनमार्ग ॥ अधनायकाकादि काक पिण्ड

स्वानादि स्वानपिपु. पिकलपिपुमूपानिष्टुतां॥ गिलादक
 विय॥ उविकलाय गिलादकस्वधा॥ साहुविय॥ उकं
 कनि२ भावनि२ भावनी२ भावनी२ पुनिहन. क्रयंकजिय.
 स्वधा॥ पंचामृत॥ उसगिलायसदधि. सघृत. समधूसख
 यु. सर्वापकज. सहिनायस्वधा॥ लखविय॥ पुन्य२ महा
 पुन्यस्वधा॥ सिद्धलामिक॥ उंचदनंचदनादि. दानपात्रमि
 नापूजाभय. समुद्ररुलनसमयस्वधा॥ ऊऊकानय॥ उंसर्व
 वित्तर्वापायविलम्बानि. वृक्षा. लंकावय. पूषीनाय. जील
 पात्रमिनापूजाभय. समुद्ररुलनसमयस्वधा॥ नगनाऊति
 मनाऊछाय॥ उं नगनाऊपुष्य. नगनाऊनथेवच. विचि
 न. पुष्यदानपात्रमिना. पूजाभय. समुद्ररुलन. समयस्वधा.
 ॥ (धोवाऊछाय॥ उं दधिवक्. अन्नदानपात्रमिनापूजाभय.
 समुद्ररुलनसमयस्वधा॥ रुलरुल. ॥ उं लंगामधू. उं कुना
 वदा. लिवनिरुलादय. ॥ कर्क. निचूननानंग. नगा. निरुल. (धो
 यथन॥ धूप॥ उं धम्म२ धूपध्यानपात्रमिना. पूजाभय. समु
 द. रुलनसमयस्वधा॥ मनविय॥ उं दी. जालो. काल. २.
 कालय२ दीपदान. पात्रमिनापूजाभय. समुद्ररुलनसमयस्व.
 धा॥ मालनहल॥ उं वा. २. जीलपात्रमिना. पूजाभय. स.
 मुद्र. रुलनसमयस्वधा॥ आखलकय॥ ॥ उं मुनि. २. महा.

51
 निसूरवावल्पांमनुगच्छुस्वधा ॥ किञ्जाननः ॥ उं नृपानकुमहा
 धारा नृपायां वनपत्नीनदो ॥ नृपायांमधुसंज्ञा नवुद्धं
 अमास्यहम् ॥ उं नीलया निर्यगानि च पनदवा सूपाच
 यः ॥ उं किञ्चु रुवकाकापं नवुद्धं पक्षमास्यहं ॥ संकल्प्य ॥
 उयथादिमानसंकल्पना सिद्धिपसु ॥ गहावायकं ॥
 गिपूजायाय ॥ ॥ धामधुलथिय ॥ किञ्जाननः ॥ क्रासू
 सिद्धागेकं ॥ स्वांछाय ॥ पल्लिस्वां ॥ उरुस्वां ॥ धस्वां ॥
 समस्तस्वांछाय ॥ उं पञ्चापनपुष्पानम ॥ छायच्छायाय
 स्वाय (कोविथ ॥ उं दधिक्षीपदापपायामिनापूजामघ समू
 दुरुल्लनसमयस्वधा ॥ स्वां हा ना छाय ॥ उं मलयमांस
 मुन्नज्ज सर्वापक ॥ सहितायस्वधा ॥ धच्छाय ॥ उं जूमुन
 मुमुनसंनवस्वधा ॥ लखविय ॥ उं पुन्यमहापुन्यस्वधा ॥
 आगवाच्छाय ॥ पिशुदानार्चनसंपूर्ण पुनपि पिशुय
 यनपस साहिन लाज्ज संपुष्टययामि ॥ ज्वग्वा छाय ॥
 उं पुंगरुल्ल नाम्बुलादि संपुष्टययामि ॥ किञ्जाननः ॥
 उं नमावृद्धाय वाहि ॥ यस्यपुसादवाहि ॥ पंचवृद्धवाहि ॥
 नदालुवाहि ॥ उं जसवीजस्ववाहि ॥ उं नमश्चक्षुसि
 हाय धम्मचक्रपवर्क ॥ उं धा नुक् ज्ञान सर्व ॥ धयस
 र्वइगनि ॥ उं नमश्च वज्राघ्रायाय धम्मवो नुस्वलावक ॥

72

सर्वसत्त्वहिताय. आत्मनस्तपदर्शक ॥ २ ॥ ॐ नमस्तुभ्यं
 श्रीषाय. समनात्म. लावने. ॥ भेदागुह. स्थितं सर्व. अतिथ.
 कपदायक ॥ ३ ॥ ॐ नमस्तु. पञ्चाश्रीषाय स्वरावेपथ्यवक्र
 क ॥ आत्मासपत्ति सत्त्वषू. धर्ममृत्. पुवर्ष्य ॥ ४ ॥ ॐ नम
 स्तु. विष्णुप्रीयस्य रावकुनमनुष्टुभ ॥ विष्णुकर्म कनाश्रया
 सत्त्वानां दुःखान्मथ ॥ ५ ॥ ॐ नमस्तु भद्राश्रीषाय. भेदा
 गुह मन्त्रायत ॥ सर्वसत्त्वषू. सत्त्वदृष्टा. कविष्यति ॥ ६ ॥
 ॐ नमस्तु धृष्टाश्रीषाय. चिन्तामणि. धृष्टधन. ॥ दानिन.
 सर्वसत्त्वानां सर्वज्ञ. परिपूर्यत ॥ ७ ॥ ॐ नमस्तु. गोप्राश्री
 षाय. कलापकलाशुद्धक ॥ चतुर्मास. वल्लभ. सत्त्वानां
 धाधिपत्यत ॥ ८ ॥ ॐ नमस्तु. कुशाश्रीषाय. आनपन.
 तुलागिर्ग ॥ भेदागुह. जगत्. सर्वधर्मवाजस्यपाप्यत ॥
 ॥ ९ ॥ ॐ नमस्तु. मालागन्धार्गीमानुयादवचतुष्टय ॥
 धृष्टाश्रीषाय. द्वापावगन्धर्वीनमस्तुभ ॥ १० ॥ ॐ नमस्तु.
 ॥ ॥ ॐ नमस्तु. अंकुश. पादाशुद्धक ॥ ११ ॥ ॐ नमस्तु.
 न. दानपापनमस्तुभ ॥ १२ ॥ ॐ नमस्तु. शिवाय. चत्वा
 च दायपादधन ॥ मुदितादो दत्ताश्रित्वा. विधि सत्त्वनमा
 स्तुभ ॥ १३ ॥ ॐ नमस्तु. शत्रुद्वन्द्वार्क. लाकपालचतुर्दिश.
 अग्निनाक. वायुध. शत्रुविधपनमस्तुभ ॥ १४ ॥ ॐ नमस्तु.

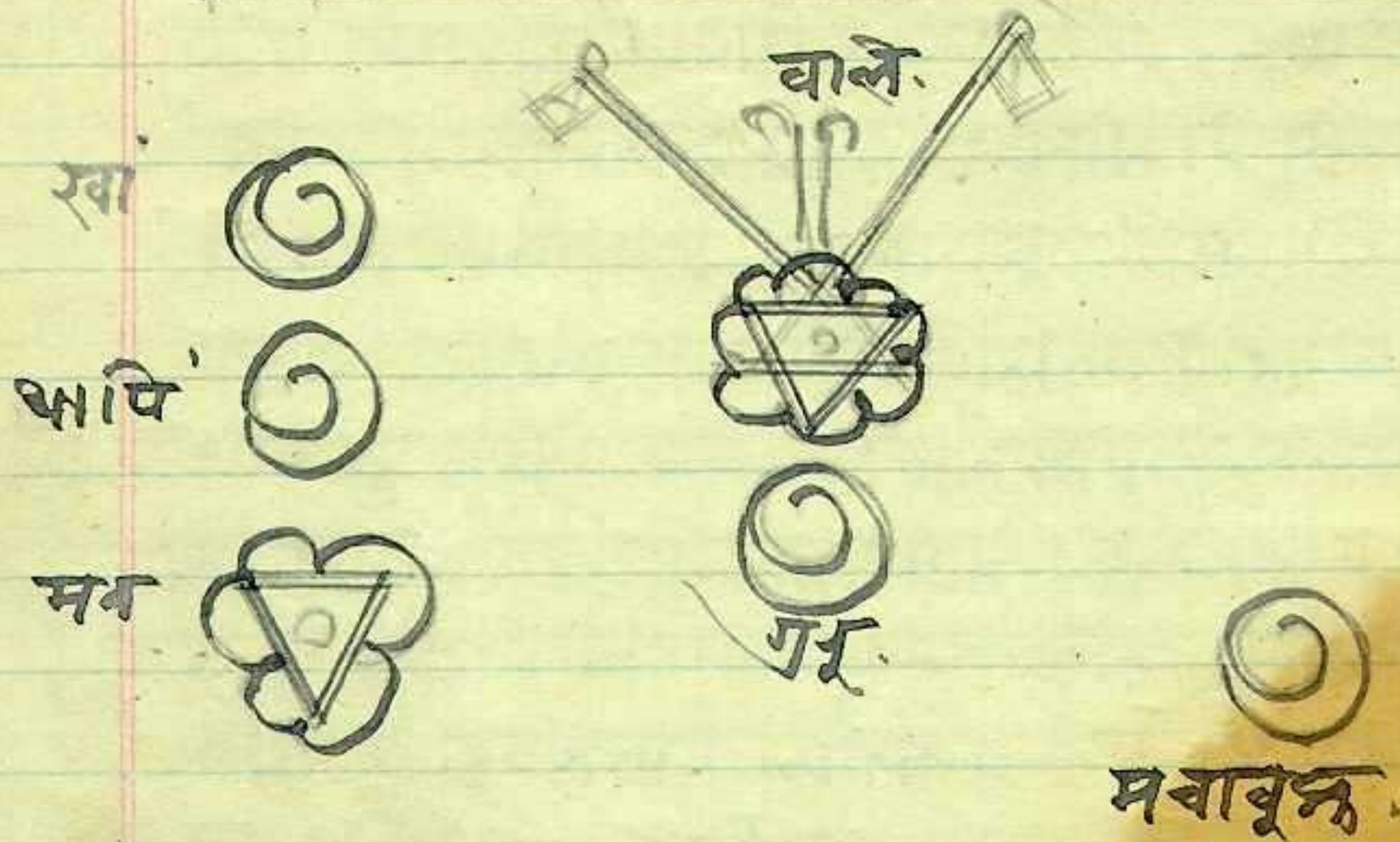
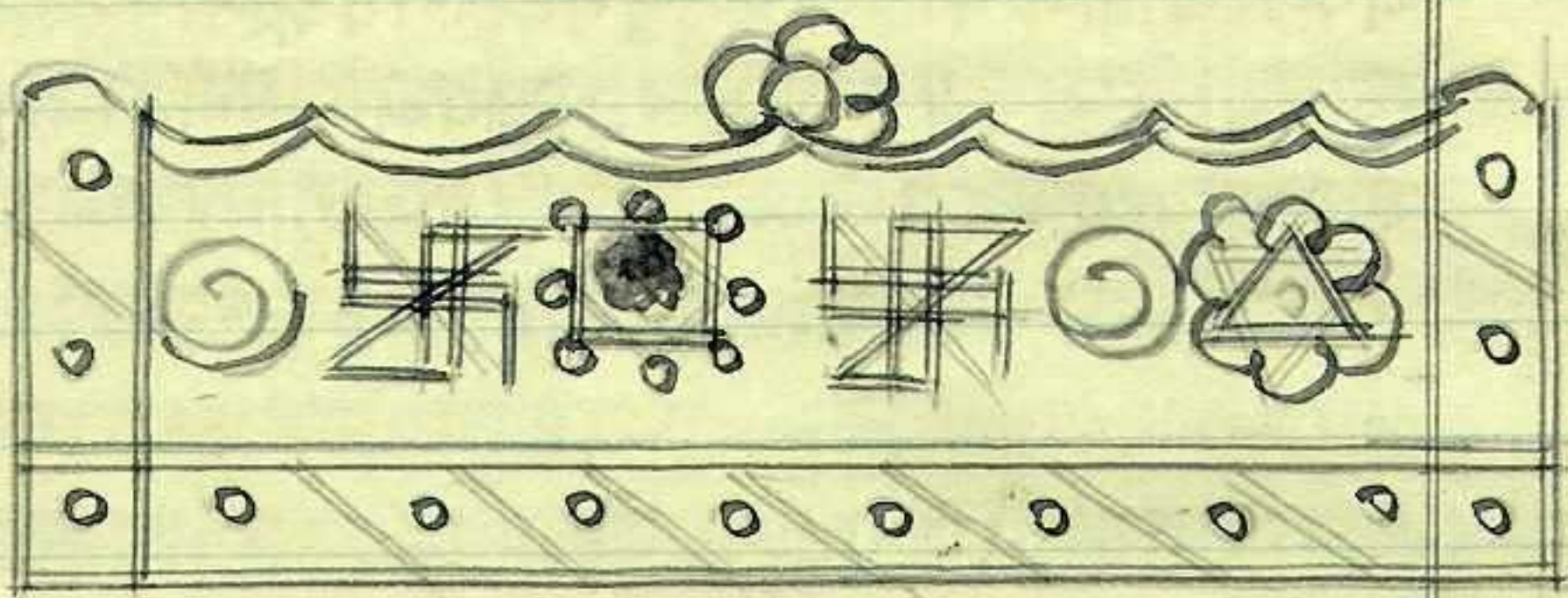
५३
 नृपाङ्गनसंगुम्भं मधुलागुम्भं ॥ १४ ॥ ॐ नमो दुर्गायै नमो विष्णवे
 भगवते नमो ॥ ॥ ३ ॥ नृपाङ्गनं महाधायं नृपाङ्गनां वेगवती
 नदी ॥ नृपाङ्गनामधुम्भं वृद्धा नववृद्धं पञ्चमाम्भं हम्भं ॥ ॐ नमो
 नृपाङ्गनायै ॥ दानपत्रियं नृमानस्य मातापितादिदेवगण दुर्गायै
 भावनं सुखावर्गं पान्थं नृपकृ पितृक्रियासंपूर्णं अङ्ग
 गन्धपुष्पधूपदीपनत्सर्वविधिपत्रिपुष्पं पत्रिपुष्पमङ्गव्या
 यनमः ॥ ॥ गुरुपुञ्जा दक्षिण आशिर्वादः ॥ सिद्धिनि
 र्कः ॥ जिस्वाङ्गायः ॥ ३ ॥ सुगन्धलागिपुष्पं नमः ॥ पान्थिवियः ॥
 उक्लिपिन्नाङ्गापत्रिचानकका ॥ ३ ॥ यावन् सर्वसत्त्वावा अङ्ग
 जावा अयायुजावा नृपिनावा संगिनावा असांगिनावा निवस
 गिनावा ॥ त्रामसंगिनावा सर्वसुखावर्गं मनुगङ्गु स्वाहा ॥
 कवलाङ्गापुष्पं खलननया पूजायाय ॥ ॥ यन् पितृगङ्गु
 उधर्तवः ॥ मनाङ्गुयवा ॥ यन् लखवा उहखवा स्वाकि
 क्रियः ॥ वाक्कः ॥ ३ ॥ हलकि पत्रययं यनलकिवगङ्गु
 यनलकिविनासाय सांगवासं च गङ्गु ॥ पितृगङ्गाय
 ऊङ्गा अङ्गाङ्गु अङ्गासगय यङ्गा अङ्गाङ्गु खङ्गासगय दधि
 चाङ्गु दधुसगय ॥ स्वपुष्पाङ्गुलिनङ्गुला ॥ रुलरुल (वाव
 ङ्गु स्वां दक्षा स्वङ्गुसितगय पूजायाय ॥ सिद्धिनिर्कः ॥
 वरुङ्गायः ॥ स्वाङ्गायः ॥ शाङ्गायः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हाय धर्मवक् पवर्तते ॥ गेधगुहं अगदखामि ॥ अधयं
 सर्वदुर्गतिं ॥ ॥ संकल्प ॥ उयथादीमानसंकल्पनासि
 द्विसु ॥ ॥ गुणमधुलदनागु ॥ विसर्जनयाथ ॥
 कृष्णनथन ॥ उधर्मधगुवर्गीधनयाय कृष्णसनउथरुव
 उधर्मगमागायकृष्णसनउथरुव ॥ उधर्मधनवायकृ
 ष्णसनउथरुव ॥ उधर्मपिनामह यथानाम्निपिस्तु य
 उथरुव ॥ उधर्मपिनामह यथानाम्निपिस्तुगागाय कृष्ण
 सनउथरुव ॥ उधर्मपिनामह यथानाम्निपिस्तुगागायउथ
 रुव ॥ लम्पापुद्रयधयाय ॥ लम्पापनिषुद्रनस्य ॥ धर्मा
 पिनायगु ॥ स्वपिनादिउगान यथानाम्निपिस्तुगागाय
 कृष्णसनउथरुव ॥ उधर्मविकलायभूधगामन ॥ पिस्तुउ
 यक ॥ रुडाथ ॥ सासखिवथिय ॥ उधर्मगवर्कि
 हामलंहावर्कि ॥ वाक् ॥ उधर्मनिपलपमानन पिस्तुद
 यागायास्य ॥ उधर्मसफगागालि कूलभक्तामकृष्णन ॥
 ॥ धूपनय ॥ उधर्ममहापत्र पत्रकिपल कृष्णनिमार्ग
 विनासाय सुगामिमार्ग दर्शयत ॥ दीप ॥ उधर्ममहा
 पत्र पत्रकिपल कृष्णनिमार्ग विनासाय सुगामिमार्ग
 दर्शयत दीपनम ॥ लंखधाराथय ॥ पिन्न ॥ उधर्मदिका
 यावहिर्गुमो स्थापयत पिस्तुगजन ॥ कूलधारागुनीग

५५
ॐ सगर्भं सगर्भं वत ॥ दक्षिणी कृत्य पञ्चमाभिः पञ्चिमा
लिमुखः ॥ शिवाकलः ॥ वाकलः पित्रापूर्वः ॥ क्षीसूर्यद्वय
यकः ॥ दक्षिण नालः पित्रुचयकः ॥ विक्लपिभुक्त
खुसियासिधनयः ॥ पित्रुखुसिचयकः ॥ ॐ नः पित्रुकि
यासमाप्तः ॥ ॐ ॥

70

ॐ सर्वधो कलशं गाणाय श्री जे



थनमचावृष्यनक्षत्रगु॥ ॥ यथाविधिथांभापनायाय॥ ॥

द्रापां ॥ सूर्यार्घ्याय ॥ पंचगव्य ॥ धनयाय ॥ निपत्रस्वरूपं
 स्वर्गवपुजाय ॥ ॥ गुग्गुलुमधुलदय ॥ बहस्पदनर्क ॥

निममाधिदत्तः॥ निलाञ्जनायः॥ मगरुनालवानाथः॥ ११

३. इधमावाहसु पुरावा. हनुगषा. गथागान. ॥ इवझिषां व

यो नित्याय हवन्वादिमहाश्वमनु॥ कलशपूजायाय ॥

स्वा. अपिपूजायाय ॥ धूपकत्र ॥ गगवन्धीमन्धीली

वाङ्मयी दृष्टी आवाहनाय ४० दं वदधुपनियान्नया मिनभा

नमः॥ ज्ञायः॥ उहहा दीमुखपानिकुखाहा॥ लाकुकनय-

ॐ नमो वासुदेवाय ॥ अमुं क्रीडां ॥ गच्छ मुदा याय ॥

उच्चाः कृ हहा ह्री हकाय हयमवसु हाकायगश्चनहायवासा ५१

काच वीज हताच अमुताकाय नुता वयन ॥ आकवस पादा

॥ स्वानवाथ ॥ ३५ ॥ हथवाथ ॥ ३६ ॥ स्वाहा ॥ ३७ ॥

गन्ध. पाथयस्वाहाः॥ उ० उ० दायानपाथयस्वाहाः॥ उ० नमो नमो

चक्राय स्वाहा ॥ पुं संलग्न चक्राय स्वाहा ॥ उ महासूर्य चक्राय
स्वाहा ॥ पुं नक्षत्राणां चक्राय स्वाहा ॥ मृगशिरा चक्राय स्वाहा ॥

स्वाहा ३ वज्रपुष्पपानक स्वाहा ३ पद्मपत्रपुष्पपुष्पावल्याः
महिः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादाः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

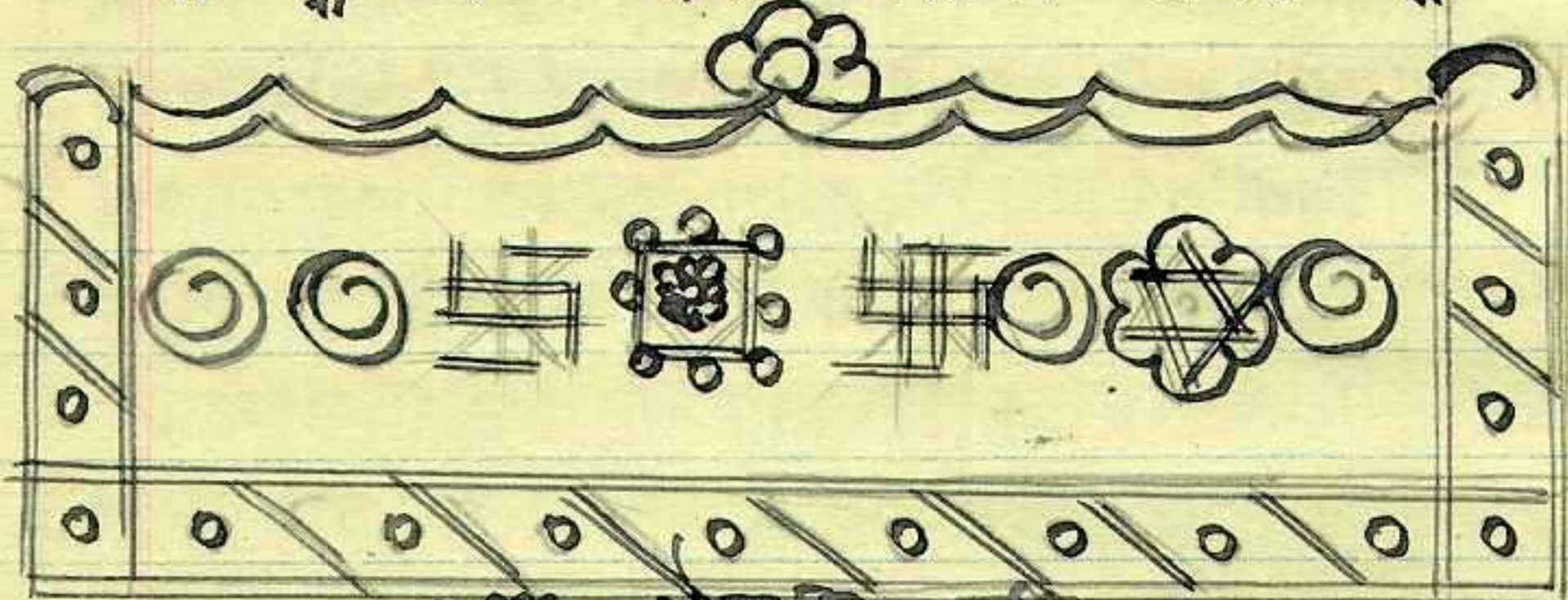
...वाग्विभक्तम्...

कूलपूजायाथ ॥ धूपकेन ॥ उं ह्रीं गवन्त्री मन्त्री ह्रीं अगा-
 म्वायः आवाहनाय ॥ दवदधूपनिर्यामिया ॥ मिनमानम-
 ॥ आप ॥ उं ह्रीं अगांस्वयाय कुरु द्याहा ॥ आकर्ष-
 पादाय पूजा ॥ स्वानवाय ॥ उं ह्रीं अगांस्वयाय स्वाहा ॥
 उं अरुनदाकिनीयस्वाहा ॥ उं वनलदाकिनीयस्वाहा ॥
 उं वज्रपूषापतिरुस्वाहा ॥ पञ्चपञ्चनपूजायास्यास्तुति ॥
 उं अगांस्वजगन्नाथं अगिनी जालनायक ॥ अगांस्व-
 सदावीर्य अगांस्वनमानम ॥ स्मरकथाय ॥ अ. खा. ला-
 मत. नायहलि ॥ मवावल्लिपियाहय ॥ पञ्चगव्यविथ ॥
 गुग्गुलुलद्वय ॥ मगरु नालवागथ ॥ सकलपानिकाक-
 या ॥ सगविथ ॥ तपलि च्वाकल दक्षिणयालउल्लय-
 मृगुहार्क ॥ नामकथ ॥ उं अमृकनाममृगस्व ॥ वज्रथिय-
 स्वकथ ॥ स्वस्तिवाक्कवात्र ॥ सिंसापालूकथ ॥ मवाया-
 नपञ्चामृगनर्क ॥ उं मधुनपासनस्वाहा ॥ विसर्जनयात्रा-
 कलंवर्ककथ ॥ वाक्पूजायाथ ॥ बहस्पदनर्क ॥ किञ्चि-
 तनर्क ॥ गुग्गुपूजायाथ ॥ दक्षिणकथ ॥ गुग्गुयान-
 विथ ॥ अजिमायानविथ ॥ अकलिनकथानविथ ॥
 सिंसापालू आगवाकथ ॥ पञ्चाकलकथ ॥ सना-
 कनवात्रा विसर्जनयाथ ॥ सगलपानिकाकथ ॥ सगन-

५७
३॥ सिद्धाग्निकः॥ कलशमिध्याकवियः॥ कलवाकिकायः॥
आगवाः॥ गालसीह लाखाद्यायः॥ पंचाङ्गकायः॥ समयका
यः॥ खांकाकायः॥ कामिल्लूयः॥ राजनयायः॥ इतिमवुत्र
प्राप्तसमाप्तः॥ ॥

60

मा ऋ स कलश गा सि अडिद सिद्ध



अरु धामाना ककि

अकशम

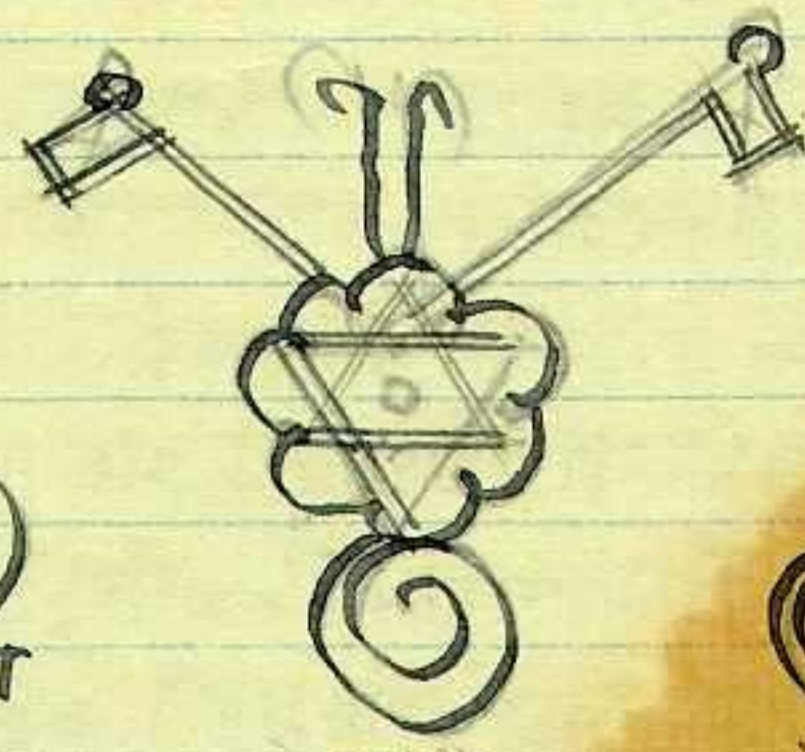
सा



धारि



मन



धामा



रुमा



गह



अकशम

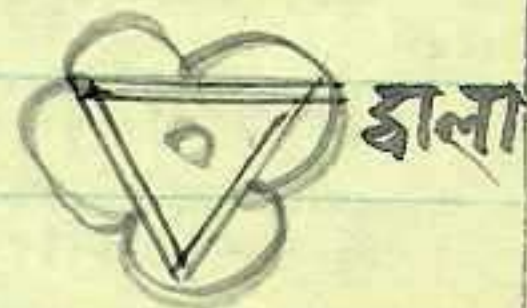
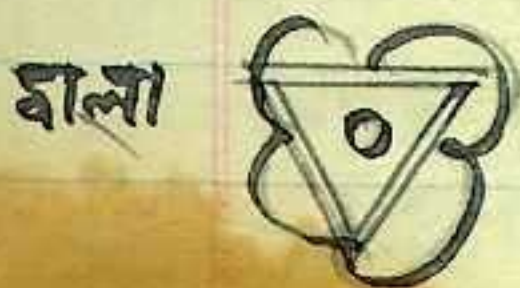
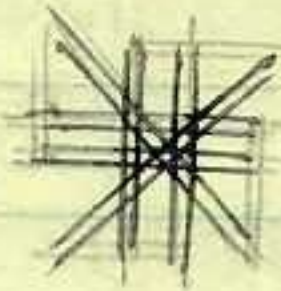
धनं कुंदाय ॥५॥ यथाविधि च थापनायाय ॥ ॥
 द्वापां सूर्यार्घ्याय ॥ ॥ गित्तं स्वयंपं स्वरावपूजायाय
 पुत्रमं सुलदं ॥ गिरमाधिदं ॥ ॥ निला ऊनयाय ॥
 मनरु. नालचामाय ॥ ॥ कलछा पूजायाय ॥ स्वां थापिं
 पूजा ॥ ॥ धूप ॥ उं आगच्छ पयमंदव. स्वच्छात्रपयम.
 उधवी ॥ ॥ अहं पूजाकवि स्यामि. सदाभि. समुखा नव ॥ ॥ रुग
 वन. श्रीमन्मूर्ध्नी वासुकी देवी आवाहनाय. ॐ देव दुर्गपं निया.
 नया. मिनमानम ॥ ॥ आप ॥ उं हहा ह्रीं अखं पुनि क.
 स्वाहा ॥ ला. कुरु नय ॥ ॥ उं नमा वासुकी देवी अमृत दीं स्वाहा.
 गनु उमूदायाय ॥ ॥ उं आ. हं हहा ह्रीं हकाव. हनमवर्धु. हा काव.
 गचनाछरी ॥ ॥ ह्रीं कायवीज हमाव. अमृताकायं नुरुगावयन ॥
 आकर्थ. पादार्घ्य पूजा ॥ ॥ स्वानवाय ॥ ॥ उं हथपीथाय स्वा
 हा ॥ ॥ उं आगच्छ पीथाय स्वाहा ॥ ॥ उं उं। दियान पीथाय स्वाहा ॥
 उं नीमनिचकाय स्वाहा ॥ ॥ उं रं गगचकाय स्वाहा ॥ ॥ उं महासू
 खचकाय स्वाहा ॥ ॥ उं वडापूषं पुनि कुरु स्वाहा ॥ ॥ पञ्चपचापपू
 जायाय सुनि ॥ ॥ उं नीलनीलाऊनी. लालाऊकाय संगसंगी
 नी. ॥ ॥ रुक्माहंवा. महवाक्क. अरुनालवमामकी. ॥ ॥ स्मयच्छाय.
 थ. ला. स्वा. छाथ. ॥ ॥ मनाविय. ॥ ॥ नायहल. ॥ ॥ क्रोमायीपू
 जायाय ॥ ॥ धूप ॥ ॥ रुगवन. श्रीमन्मूर्ध्नी. वालकोमारी.

आवाहनाय ॐ देवज्ञधूपनिर्यामया मिनमानमः॥ आपः॥
 आकर्ष्य पादार्घ्यं पूजाः॥ खानवाथः॥ उं रुद्रवाल-
 क्रोमापीयस्वाहा॥ उं चक्रवर्त्तयस्वाहा॥ उं मयूजवाहना-
 यस्वाहा॥ उं वज्रपुष्पपानिचक्रस्वाहा॥ उं महालक्ष्मी-
 स्वाहा॥ उं चक्रभाचनीयस्वाहा॥ उं सिंहवाहनायस्वाहा॥
 उं वज्रपुष्पपानिचक्रस्वाहा॥ उं गङ्गापानिस्वाहा॥ उं महाका-
 लायस्वाहा॥ उं वज्रपुष्पपानिचक्रस्वाहा॥ ॥ यज्ञापवा-
 नपूजायास्तुतिः॥ ॥ उं क्रोमापीचक्रवर्त्तनाचक्र-
 त्रवीरुसंरुवाः॥ स्वायम्भुविदुपागंच नमस्कृतमयूजवाहनी-
 उं महालक्ष्मी सिंहसनाय वज्रायत्रीगुरुसंरुवाः॥
 क्रोमापीचक्रविनासाय महालक्ष्मी नमस्तुते॥ उं अष्ट-
 रुद्रसिद्धिदात्री अष्टवक्रनिवासिनी॥ अष्टरूपवसंयु-
 क्तं अष्टमानुमानमस्तुते॥ स्मयच्छाथः॥ ध्रुवा ना-
 छाथः॥ मन्त्रविथः॥ नायहलिः॥ आदिपूजायाथ-
 आगाम्वनस्वपुष्यं॥ ॥ धूपः॥ रुद्रवज्रजीमूतजी-
 जीआगाम्वन आवाहनाय ॐ देवज्ञधूपनिर्यामया
 मिनमानमः॥ आपः॥ उं ह्रीं आगाम्वनाय ह्रीं रुद्र-
 स्वाहा॥ आकर्ष्य पादार्घ्यं पूजाः॥ खानवाथः॥
 उं ह्रीं आगाम्वनाय स्वाहा॥ उं अक्षुन्नदाकिनीयस्वा

हा ॥ उंचनालदाकिनीयस्वाहा ॥ उंचपुष्पपानिकु
 स्वाहा ॥ पञ्चपञ्चपूजायास्यासुनि ॥ उंचागाम्वन ऊ
 गननाथं आगिनी जालनायकं ॥ आगाम्वनमदावीपं आ
 गाम्वनमसुनि ॥ समयच्छाय ॥ श्व. स्वां. ना. छाथ. मन
 विथ ॥ नायहलि ॥ थनमवावलिपियाहथ ॥ ॥ गुत्र
 मधुलदनक ॥ विसर्जनयाथ ॥ निलांजन ॥ मगरुनाल
 वानाथ ॥ ॥ सगविथ ॥ स्वस्तिवाक्मवान ॥ नयलि.
 नयावसु ललाय ॥ ॥ ऊंककाखां कारवायक ॥
 वसुपूनक ॥ निसाकायक ॥ दमास. पूडा. वा. मिऊगु
 सा. सरू ॥ मिसाऊसा. काकागय ॥ था. कालिनडा. नाडा.
 मचायान ॥ कात्वथ ॥ मचायानकायक ॥ नूकामियान.
 हरूपूजायाथ ॥ निसांनिष्क. ॥ था. यवादिवायक ॥
 नसलाविथ ॥ था. छाथ ॥ धूनकाडा ॥ पंचामृननक ॥ ॥ ग्वय
 नू. नक्कामू. ॥ नक्क ॥ वाक्क ॥ जानक ॥ सिकापनि ॥ उंच
 पथमपानायस्वाहा ॥ अंगुपनि ॥ उंच. द्वानेयवानायस्वाहा
 धालापनि ॥ उंचमानायस्वाहा ॥ दथुपनि ॥ उंचवुथदा
 नायस्वाहा ॥ जालापनि ॥ उंचपंचवानायस्वाहा ॥ ॥
 सकनानया. स्वका नथकनक ॥ उंचपुष्प. धर्मपुष्प.
 सद्यपुष्पयस्वाहा ॥ कासकनानया. (को) मिसारुलनय ॥

मूकसिद्धिनाथः॥ कल्पपूजायानाथः॥ वाक्पूजा-
 याथः॥ वलिविथः॥ नहस्पदनर्कः॥ किशोमनः॥ वि-
 सर्जनयाथः॥ गुणपूजायाथः॥ दक्षिणाथः॥ गुण-
 रुपागविथः॥ सगलोपनिभाहनी. सिद्धकायाथः॥
 सगनननः॥ सिद्धनिर्कः॥ कल्पभारिथकाविथः॥
 कामावीकाथः॥ सिद्धमाहनी. पंचसूक्तानयाथः॥
 सक्तानयाथः॥ कामावीकाथः॥ अजिद्विषयनयानाथः॥
 थः॥ पंचावुडाकाथः॥ स्वा. काथः॥ स्मथकाथः॥ धून-
 काडाः॥ अंकुषिनयनः॥ देवनाथपर्कः॥ धूनकाडाः॥
 शाननयाथः॥ धूलिअंकुषाथः॥ अलः॥ अंगिरुलान्न-
 यासनक्रियासंपूर्णः॥ ॥ ॥ ॥ ॥

८३
श्रीमचा.



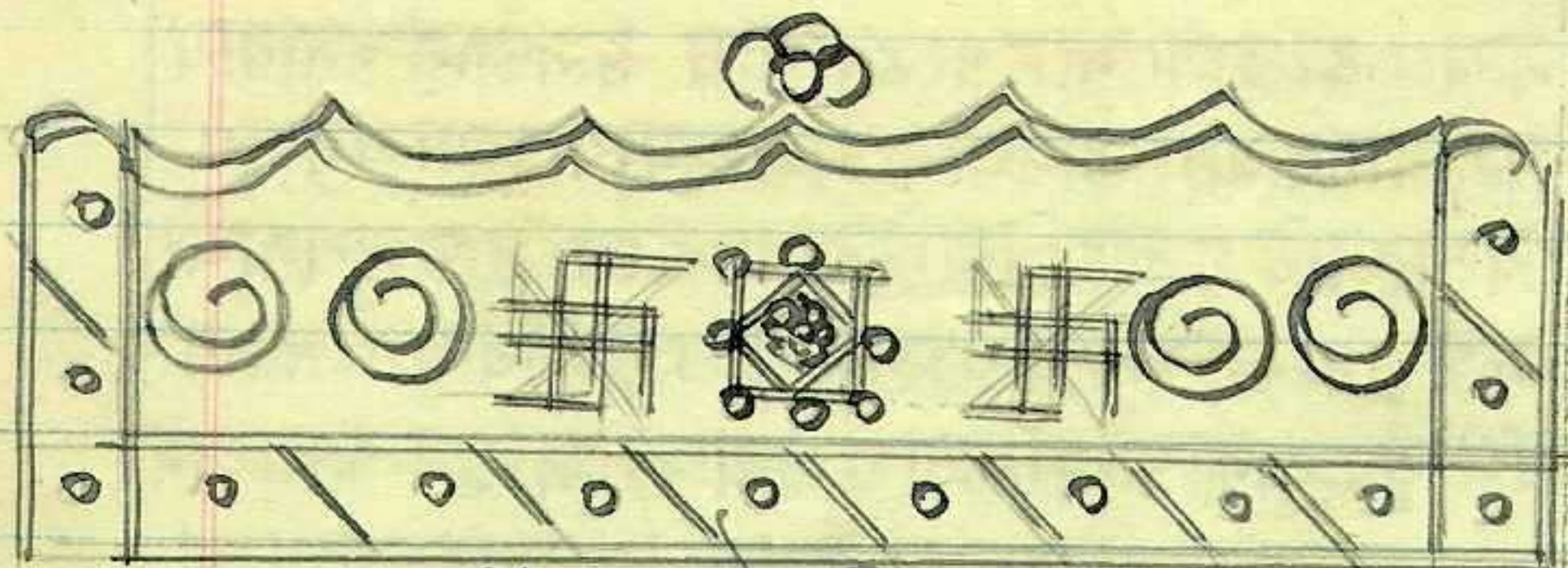
धामालीनकू
गुहाकु.

थनहाकगुविधि॥ ॥ झापा ॥ नमलाविथ॥
 वलिंपिथ॥ ॥ उंआः स्वधुपाहं विद्यामकुनः॥
 उं सव विद्यहय २ हं रु द्वाहा ॥ चलय निजा ॥ उंआः
 स्वधुपाहं सवीवेद्यः ॥ पक्क ॥ गिक्क २ हं रु द्वा
 हा ॥ पुष्प ॥ दकस्य ॥ उंआः स्वधुपाहं सवीवेद्यः
 मलानय २ हं रु द्वाहा ॥ शुक्ल ॥ विक्क ॥ उंआः स्वधु
 पाहं सवीपाप विद्यमाला ॥ सिक्क २ हं रु द्वाहा ॥
 सवप ॥ उंआः स्वधुपाहं सवीवेद्यः ॥ कालनाय २ हं
 रु द्वाहा ॥ ॥ अरवलंख ॥ गुह्यासवार्थ सिद्धि विमनसू
 मनसू मंगलवा विमन ॥ ॥ मन रु मालवाग
 थ ॥ हं धम्मावाहं गुपरावा ॥ हं गुपरावा नथागत ॥ हं व दं
 या चया निपाव हं वादि महागुक्क ॥ थुलिधुन
 काकल ॥ लिथ काविथ ॥ थाकालिनकुन गान्धि ॥
 ना लंखधागा हायका ॥ कुनहया ॥ लिगु दिआसक
 थन कलागतनापंनय ॥ ॥ झापा नमलाविथ ॥
 गवचगागनय ॥ थनपुन्ययागविथ ॥ गुलाजु थाकाली
 नकु जाहानयाग ॥ सकासिनविथ ॥ थुलिगवच
 विधुस्यंलि ॥ कन्यादानविथ ॥ पुन्ययागिनाय
 कन्यायागुछिननापंनय ॥ कल ॥ दथुसगय ॥

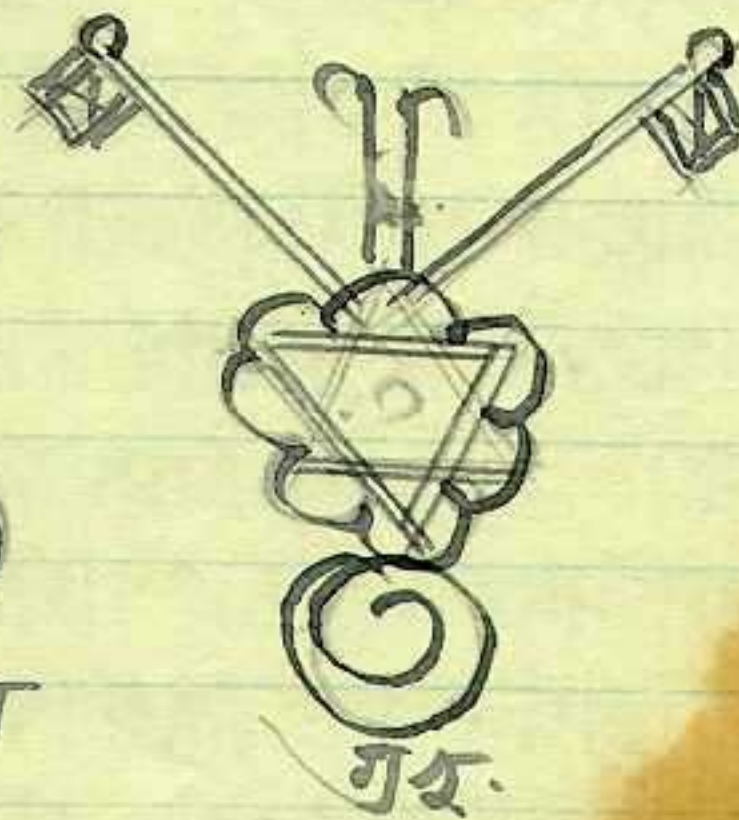
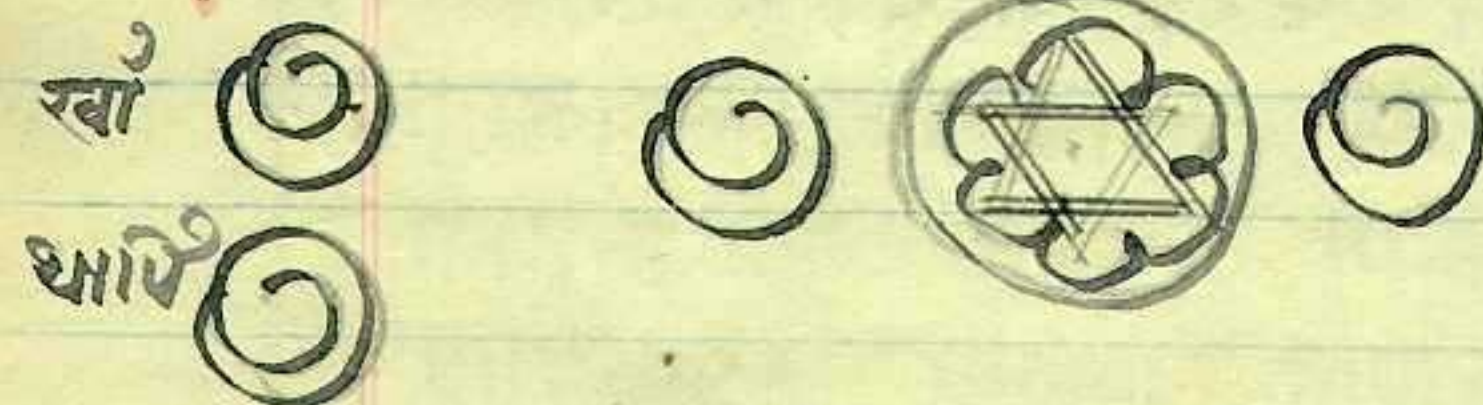
थालरूपमिज्यागु. क्कंदं गय. मिसायागुक्कंदं नल.
 नयः॥ दक्किल्ल. भाह १।४ नयाव. कल्लअल्लखहायाय.
 महादानवाक्क॥ दानपति. ऊऊमानस्य. यथा नाम १४.
 यस्यत्तादे ॥ सहविवहिता ॥ गाथा ॥ उंसर्वनाथा.
 गतामुदा. क्कन्नलाक. पलाकनी. ॥ गृहीत्वापाणिअपा.
 सि. वृद्धकृत्तपकिर्हिता ॥ अयमूमूकदिन. कयादान.
 संपदयः॥ ॥ थनअरुक्कविथ ॥ थनसहलऊन.
 याकि ॥ थालरुक्कयकि ॥ लखविथ ॥ न्ववाकि ॥ देवयु.
 थ ॥ मंडल्लाकागुवाड. ॥ कल्लक्कय ॥ थूलिहाक्कगुविधि.
 कुला ॥ ॥ ॥

६८

भा. द. स. क. गा. सि. सिद्ध.



धृति. क्षमाया कृति



रुद्रमा



श्री. हात

धनसम्पादकविधिः ॥ ॥ द्वापां ॥ सूर्यार्घ्याय ॥
 गुग्गुलुदण्डः ॥ कांठलपूजायाय ॥ जहस्पदनम् ॥
 निसर्माधिदण्डः ॥ निलाञ्जनयाय ॥ कलङ्गपूजायाय ॥
 वानुषीपूजायाय ॥ धूपः ॥ रत्नावलीमन्त्रजीवावुषी-
 दर्वीआवाहनाय ॥ दं वज्रधूपनिर्यामि ॥ आपः ॥
 उं हं हं हं अखं पानि कृत्वा हा ॥ गन्तुमुदायाय ॥ उं आ-
 ह ॥ आकर्षण. पादार्घ्य. पूजा. ॥ स्वानवाय ॥ उं हं थ-
 पीथाय स्वाहा ॥ उं उं दीयानपीथाय स्वाहा ॥ उं जालंध-
 रपीथाय स्वाहा ॥ उं पुष्पुगिनिपीथाय स्वाहा ॥ उं निर्मा-
 लचक्राय स्वाहा ॥ उं धम्मचक्राय स्वाहा ॥ उं संज्ञाचक्रा-
 य स्वाहा ॥ उं महासूखचक्राय स्वाहा ॥ उं वज्रपुष्पपनि-
 कृत्वा हा ॥ पञ्चपत्रपूजापास्या मुनि ॥ नीलनीला-
 जनीलाता अक्राम्य. संगमं गिनी ॥ रुक्मा हन्वानमस्यामि.
 अक्रुतारुवमामकि ॥ स्मयच्छाय ॥ ध. स्वां. नाच्छाय.
 मनविथ. नायहल्ल ॥ कोमारीपूजा ॥ धूपः ॥ रत्नावली-
 मन्त्रजीवावुषी. सिधिनी. व्याधिनी. आवाहना-
 य ॥ दं वज्रधूपनिर्यामि ॥ आपः ॥ आकर्षण. पादा-
 र्घ्य. पूजा. ॥ स्वानवाय ॥ उं रुं रुं द्वाल्नकोमारी स्वाहा.
 उं नरुवर्णाय स्वाहा ॥ उं मयूराक्षरी स्वाहा ॥ उं वज्रपुष्प

योगेच्छाहाः॥ उं महालक्ष्मीनमस्वाहाः॥ उं चक्रकक्षीनम
 स्वाहाः॥ उं सिंहवाहनीनमस्वाहाः॥ उं वज्रपुष्पं पानिच्छ स्वा
 हाः॥ उं महाकालाय नमस्वाहाः॥ उं गणपतिनमस्वाहाः॥
 उं वज्रपुष्पं पानिच्छ स्वाहाः॥ पञ्चापचापपूजायास्पासुमे
 उं कामापीनकवक्षु लाचकाय वीजसंलवाः॥ स्वायुधा विरु
 पागंचनमस्तु मयुजवाहनीः॥ ॥ महालक्ष्मीनकवक्षु
 लाचकाय वीजसंलवाः॥ स्वायुधा विरुपागंचनमस्तु सिंह
 वाहनीः॥ अष्टभुजस्मितादेवी अष्टवृक्षनिवासिनीः॥ अष्ट
 भुज संयुक्तं अष्टमातृका नमस्तुते॥ स्मयच्छाये॥ श्र
 र्वाः नाच्छाये॥ मगविथ॥ गंहल्लि॥ ॥ तउमवा
 मथकुपितः॥ गुणमधुलदनकं॥ विसर्जनयाथ॥ त्रिलो
 जनः॥ मगरु नालवागाथ॥ थूलिधूनकाउ॥ कलज्जा
 नथ॥ गुणकु थाकलीपिनवीथ॥ चिकं कलनं वृयकं
 थवूलीनकनकं॥ आदोविकागुद्ध कर्णद्वीस्वरूप स्पर्श
 नपानिच्छ स्वाहाः॥ ककिवाकनकं॥ दिनियविकागुद्धर्थ
 कागिस्पर्शनपानिच्छ स्वाहाः॥ सिद्धरुथ॥ तृतीयकक्ष
 वधनार्थं पंचवृद्धस्वरूपसं वदयन्॥ इत्येकं कनः॥ पानि
 विम्बुसमाधर्मा आख्यागुद्धा हंवाविना॥ अणाय
 अत्रकपाच हंयुक्कर्म समूहवः॥ कुमापीसूक्तो हिनकं हं

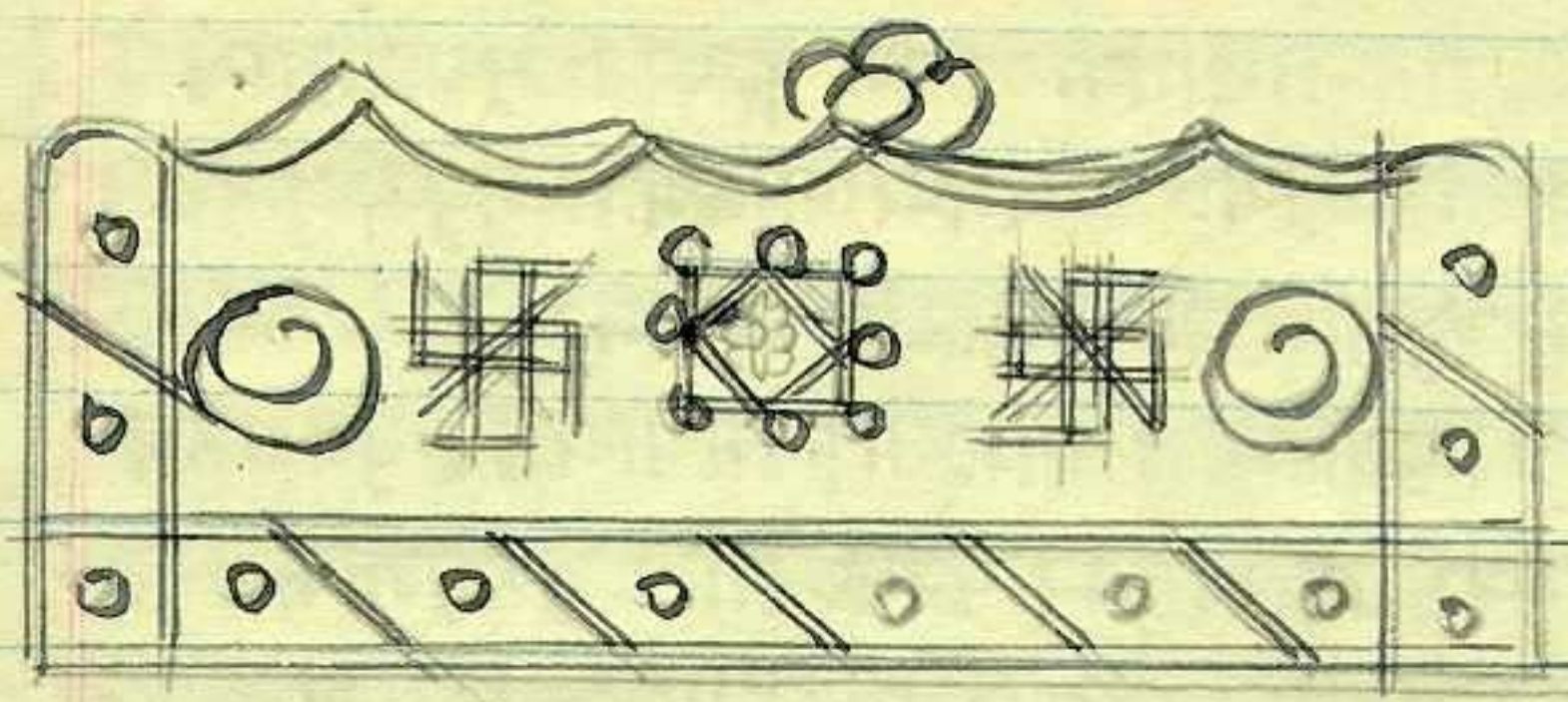
७१
 नु ॥ पंचवृद्धस्वरूपनकुमारीमूर्तं पतिकुस्वाहा ॥ ॥
 पंचवृद्धस्वरूपं पूजायाथ ॥ धूप ॥ लवणनक्षीमक्षीक्षी
 पंचवृद्ध नथागत आवाहनाय ॥ ॐ देवदुर्वापानेर्यामया
 मि ॥ ॥ आकर्षय पादार्घ्यं पूजा ॥ स्नानार्घ्यं ॥
 उञ्जार्यविलाचनायस्वाहा ॥ उञ्जारायस्वाहा ॥ उञ्जामिना
 रायस्वाहा ॥ उञ्जमाद्यासिद्धिस्वाहा ॥ उञ्जानायस्वाहा ॥
 उञ्जामर्दिस्वाहा ॥ उञ्जानायस्वाहा ॥ उञ्जानायस्वाहा
 हा ॥ उञ्जपुष्पपातिकुस्वाहा ॥ ॥ पञ्चापवाप पूजा
 रास्यासुनि ॥ उञ्जमस्तु पंचवृद्धं नृणां अक्षय्यादि कुलनय
 मध्यावलाचनाय पंचवृद्धनमस्तु ॥ ॥ सिद्धार्थ ॥
 उञ्जानागवचकना निरुक्ता विद्युत्तुनागास्वरा दधनि
 नृनयार्थेलाभ्यभाहिना पियुषधारापूजा ॥ वृद्धावृद्धस्तु
 नयसावित्रा विक्रुषा सामन्त सिद्धिहना रावागाव विद्या
 किंभाविनाहिना क्षीवद्ववापारी मायानुव ॥ ॥ सगन
 नाथ ॥ मिरुल्लूय ॥ माधिकमिल्लुल्लूय ॥ कृष्णा मूष्णा
 आगनय ॥ कसिहालखन ॥ आगनयर्क ॥ ॥ देव १
 गुणाजु १ थाकालि थाकालीनिकां २ समील्लूककां १
 थूलिसेन कृष्णा वाजि मधि विथ ॥ धूमकालि ॥ वाक
 पूजा ॥ किञ्जाननक ॥ गुणपूजा दक्षिणा विसर्जन ॥

72

सिद्धमिदं ॥ सिद्धामुक्ताकाय. निर्विक ॥ ननुमचामयहृदिपेन.
द्रसकं सिद्धाम्. कानकां ॥ जप्यकश्चाय ॥ सकनांनयाकोमा
रीक्षाय ॥ ॥ स्मयकाय. रवा. काय ॥ सहजोदन
यर्कि ॥ ॥ थूलिअप्यकिगुविधिस्तुतम्. ॥ ॥

73

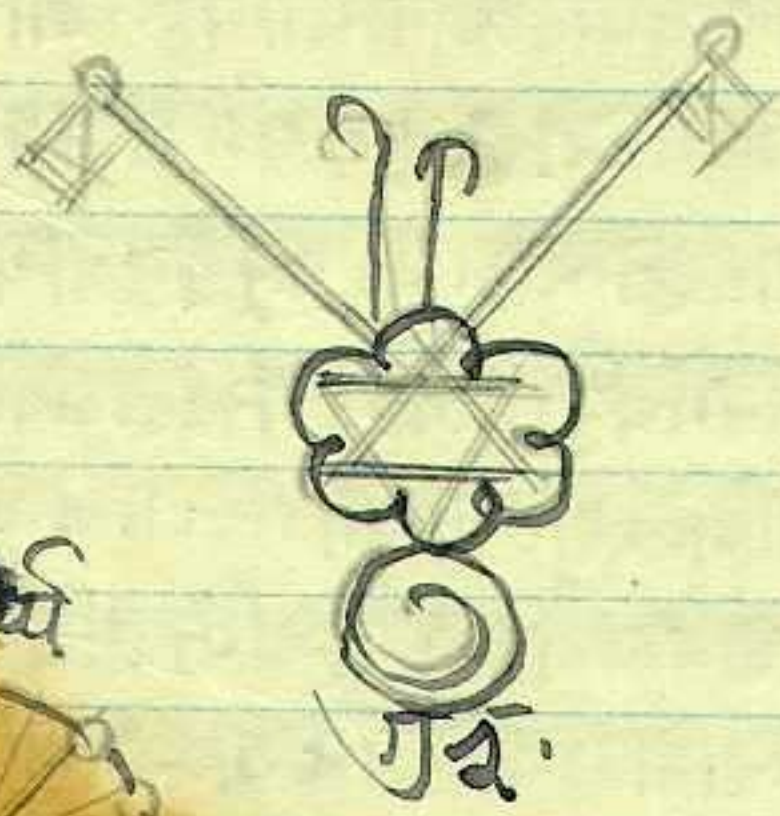
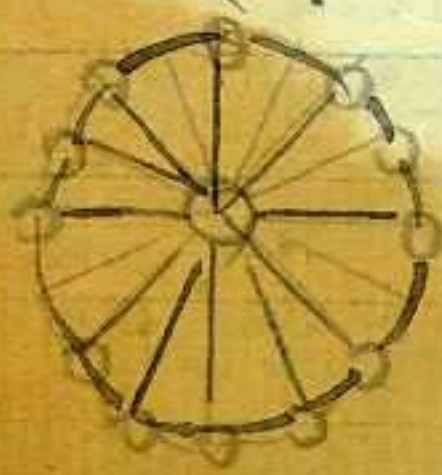
ॐ स. क. रणा सि.



खां
धाणि
मन्



रूप



गन्



माझात्रयाक

धनवाद्वायनर्कगुः ॥ ५ ॥ यथाविधिधापनायायः ॥
 कलशः सकंधो ॥ गणेशः क्रसकं । सिद्धाम् । २४ वा
 धापिः मतः ॥ धापनायायः ॥ द्वापाः ॥ सूर्यार्घ्यायः ॥
 गुणपादार्घ्यायः ॥ पंचगव्यं धानं ॥ गुणमधुलदनं ॥
 ॥ सिद्धपूजा ॥ ब्रह्मकायः ॥ त्रिसमाधिदत्तः ॥ कलशः
 पूजा ॥ त्रिलोचनः ॥ वारुणी पूजायायः ॥ धूपः ॥ उं आ
 गच्छ पद्मदेवः स्वस्ति नः परमेश्वरी ॥ अहं पूजाकरी स्यामि
 सदा नमः सनमुखानवः ॥ नमो नमः श्रीमन्नमो नमः । वायुनादवी
 आवाहनायः ॥ देवः पूजयेन्मया ॥ आयः ॥ उं हहा
 दीं अखं पतिं कृत्वा हा ॥ ला कृत्वा ॥ उं नमो वायुनाद
 वी अमुनं दीं अखं पतिं कृत्वा हा ॥ गनु नमो दायायः ॥ उं आ
 हं हहा दीं हकावः हनं वः ॥ हाकावः गन्तव्यं ॥ दीं काव
 वी अहं कावः अमुनाकायं कृत्वा वयम् ॥ ॥ आकर्मः
 पादार्घ्यः पूजाः ॥ स्नानवायः ॥ उं हधपीथाय स्वाहा ॥
 उं आगधपीथाय स्वाहा ॥ उं उं । दियानपीथाय स्वाहा ॥
 उं नीमनिचकाय स्वाहा ॥ उं सगगवकाय स्वाहा ॥ उं म
 हासूरवकाय स्वाहा ॥ उं वज्रपुष्पं पतिं कृत्वा हा ॥ ॥
 पञ्चायवापूजा वास्याम् ॥ ॥ उं नीलनीलांजनी
 लाहा अक्रामः संगसंगी ॥ ॥ रुक्माहं वामहवाक् ॥

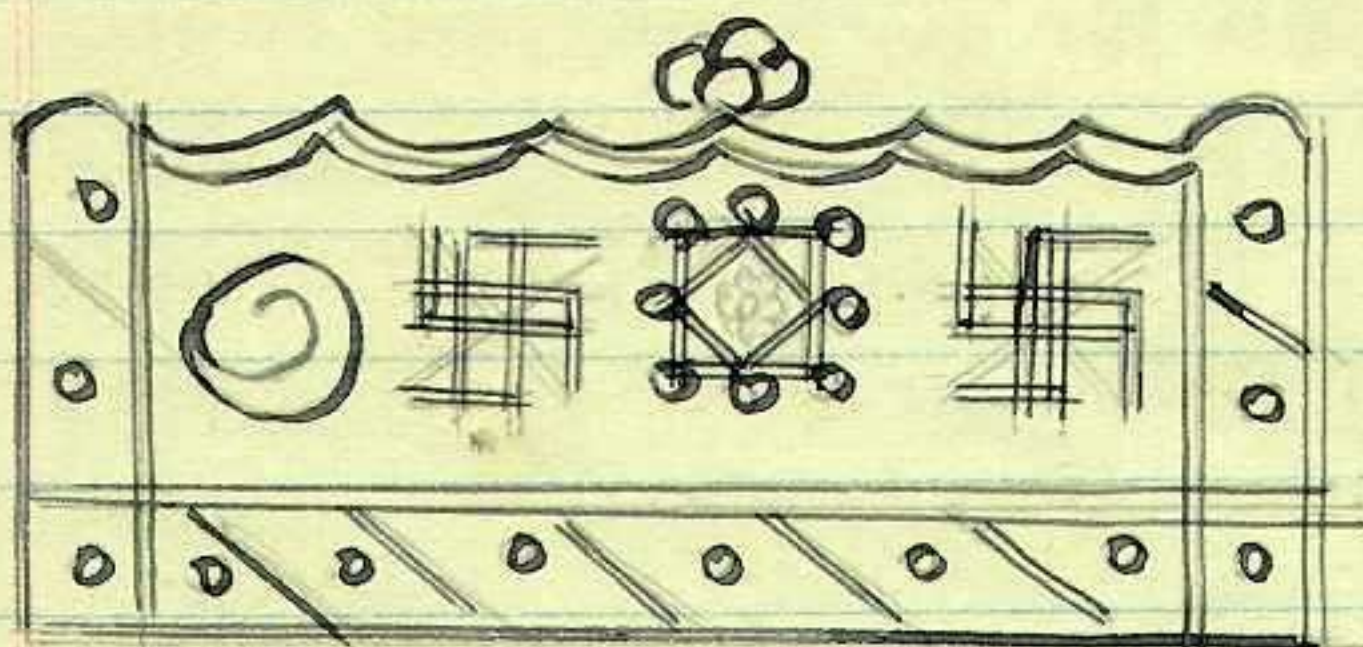
अरुणाक्षवमामकीः॥ ॥ थनसूर्यमधुलपूजायाथ॥
 ॥ धूपः॥ लगवन्धीमन्त्रीः॥ सूर्यदेवआवाहनाय॥
 देवक्षधूपनिर्यामयामि॥ आकथ्यः॥ पादायः पूजाः॥
 ॥ स्नानवाथः॥ उं भनूकालायस्वाहा॥ उं धीमांतिस्वाहा॥
 उं काकुमायास्वाहा॥ उं वृद्धायस्वाहा॥ उं रागापनाय
 स्वाहा॥ उं अशुभाकमायस्वाहा॥ उं कृष्णवर्णायस्वाहा॥
 उं चाक्षुषस्वाहा॥ उं कर्मवस्वाहा॥ उं वक्षपूष्यपुनिकुस्वा
 हा॥ पंचापचापपुष्पावास्यास्तुतिः॥ उं जवाकुडमसंकाठां
 काक्षपयमहास्तुतिः॥ नमोऽलिः सर्वपापं फलमामि दिवाकयं
 नवशक्त्यः॥ मन्त्रविथः॥ मायहलिः॥ थनलिवाहानया
 न्नः॥ सूरानंमखंकहथः॥ सूर्ययातकिरपलीनया॥ उं खाल
 उल्लः॥ स्वामिन्वायायानथः॥ पंचगायविथः॥ गुनमधुल
 दनकः॥ निलांजनः॥ मनरुः॥ नालवाभाथः॥ सूर्यरावना
 याथः॥ किडाग्नः॥ अर्घ्ययकिः॥ महादानवाक्षिकाथः॥
 उं दुग्धाकमावडायुकं नवनयादिहामकः॥ उं खरपुनि
 गुङ्गुः॥ अर्घ्यदेरुमयामूदाः॥ लगवन्धीमन्त्रीः॥ सूर्य
 देवनाः॥ लदानकपः॥ देवकाकमलायः॥ अर्घ्यपुनिकुस्वा
 हा॥ उं खपूजायाथः॥ थनस्नानगवयवाथः॥ जवत्स १२
 जाकिस्वानः॥ दाकिः॥ १२ जवाः॥ जवय १२ नयाधाः॥ जीव्यः

उ० भयनाक्षिस्वाहा ॥ उ० वृषनाक्षिस्वाहा ॥ उ० मिथुनाक्षि
 स्वाहा ॥ उ० कर्कराक्षिस्वाहा ॥ उ० सिंहनाक्षिस्वाहा ॥
 उ० कन्यानाक्षिस्वाहा ॥ उ० तुलानाक्षिस्वाहा ॥ उ० वृश्चिक
 नाक्षिस्वाहा ॥ उ० धनुनाक्षिस्वाहा ॥ उ० मकरनाक्षिस्वाहा
 उ० कुम्भनाक्षिस्वाहा ॥ उ० मीननाक्षिस्वाहा ॥ उ० वज्रपूष
 पानिष्ठस्वाहा ॥ यज्ञपत्राय पुञ्जनायामुनि ॥ ॥
 ॥ आन ॥ उ० अया कूडामसंकाशं काष्ठपत्रमहाशुनि ॥ नमो
 विसर्वपापपञ्चामामिदिवाकयम् ॥ नवय ॥ मग ॥ १२ म्वा
 विथ ॥ नायहाय ॥ ॥ धूलिवृनकाश ॥ किडामन ॥
 पुत्रपूजा ॥ दक्षिण ॥ द १२ म्वा ॥ द १२ धा कालेयान
 ॥ विडा अर्जयाय ॥ सिद्धानिक ॥ सिद्धामूककाय ॥ सिद्ध
 काय ॥ सिद्धाय सिद्धानिक ॥ ससकं सिद्धामूकका
 गायत्रिकाय ॥ पंचाकूडकाय ॥ स्वां काय ॥ ॥
 आसनयाय ॥ वज्रस्वलाभावनसंपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥

22

18

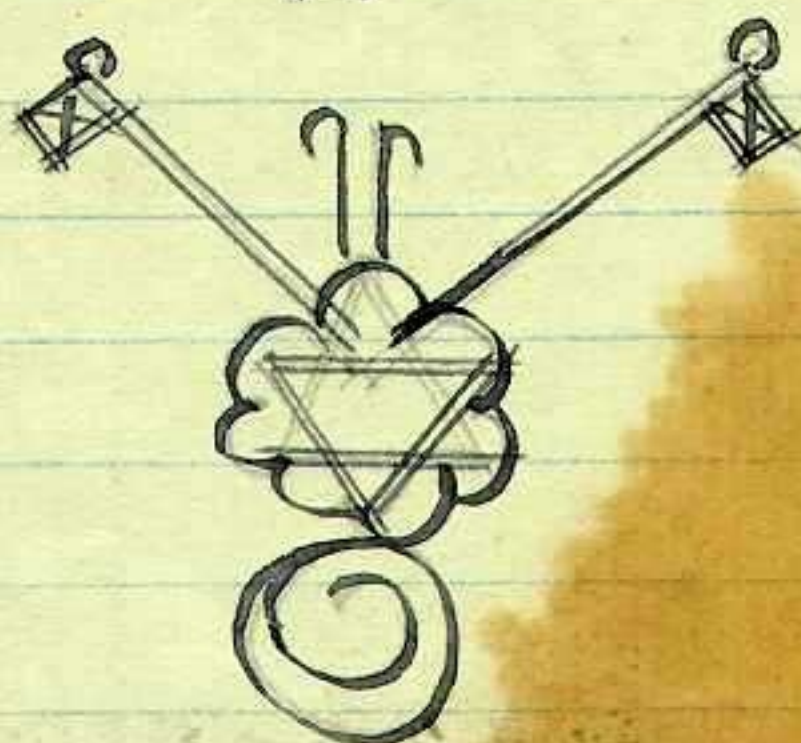
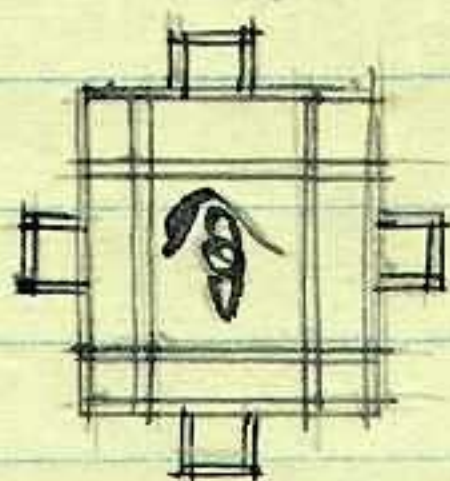
नकि स. द. रगा.



आपि



यक



उन्मार्गीवज्रसन्वाय ॥ ॥ द्वापा कलङ्का सगरक्षे
 (गागम. थापि. मग. नकिं ३ अस्मिदसाधुमि. थालिष्ठाप
 नायाथ ॥ ॥ द्वापांशुर्वाधियाथ ॥ गुनुपादाधियाथ ॥
 गुनुमभुलद्व ॥ चहस्यमाथ ॥ निममाधिद्व ॥ कलङ्कापु
 जा ॥ ॥ निलाजन ॥ थापिंपुजा ॥ वात्रुधीस्त्रपुपुजा
 यरुज्जापमुयाथ ॥ नभाज्जिगुधुधियान ॥ अरवलखंहाया
 थ ॥ वाक्थ ॥ उरवधुनाहंरुद ॥ ॥ पंचवृहिनय ॥
 उंमदनीवजीरववज्रवचंरु ॥ वज्रभुलावातंथिय ॥ उंवज
 सत्तज्जा ३ कृष्णाक्षत्र ॥ उं०००ममहाकृष्णदित्वापविगावक्र
 धवना. वृद्ध. धर्मा. सधलना. पृथ्वीवीजाना. दलगरा. दानप
 नि. यजमानस्य. सर्वाविघ्नहय २ हुरुदस्वाहा ॥ थनयरुध्या
 कूनसं००दादिल्लकपालपुजा ॥ जाप ॥ आकर्षण. पुजा
 ॥ खानवाथ ॥ ॥ उं०००दाय. मूनाधिपन. स्वाहा ॥ उं०
 यमाय. पुनाधिपनस्वाहा ॥ उं० वज्रभायनागाधिपनयस्वाहा
 उं० कृवलायकुक्राधिपनयस्वाहा ॥ उं० अग्नेयमजाधिपनय
 स्वाहा ॥ उं० नमृधनाक्रसाधिपनयस्वाहा ॥ उं० वायुधपव
 नाधिपनस्वाहा ॥ उं०००दायकुनाधिपनस्वाहा ॥ उं० वज्र
 पुष्पापनिष्ठस्वाहा ॥ पञ्चपवापपूजा नास्यामुनि ॥ स्मथ.
 थ. खां. ना. क्वाथ ॥ मनावेथ ॥ हं धर्मावाग्रादि ॥ थनकाष्ट.

आधनः ॥ सिङ्गाका ज्ञानके ॥ अखलखहायाय ॥ उंसरेका
 दकपनिक्खाहा ॥ उंखधुभाहं ॥ पंचवृक्षं खनुपंपूजा.
 दानपानिकाय ॥ सिपनन ॥ उं वृद्धश्वायानुसर्वे ननु जि
 नमृगा दवना नसुञ्जा वृक्षशालाकपालास्वसूगदिव.
 सदा दवनालेखमना. आन्नाकल्याण. चिन्तासकल ऊ
 नपाणि. नाभयक्रानिनाव. पूजागुद्रकुञ्जानि. विजय नु.
 अगमा. इदिजागदियकु. धनमिन्नाघानसंकापका
 मयक ॥ उं विद्यानकृग. सर्वविद्याहय २ कुरु स्वाहा ॥
 दानपन्यादे ॥ स्वस्तिवाक्काय ॥ गुरुमस्तु. स्वस्तिव.
 कुनूगावृक्ष. स्वस्तिदवा. समस्तु. स्वस्ति. सर्वाणि नूनानि.
 सर्वकालादिसुव. वृक्षपूया. नृगावन. दवनानामन.
 नवः ॥ अथार्थ. समस्तु. पग. सर्वा. अथ. समस्तु.
 स्वस्तिव. द्विपद. लवनु. स्वस्ति ॥ द्विचतुर्पद. स्वस्तिव.
 वृक्षमांसा. स्वस्तिपन्नागदपुच. स्वस्तिना. स्वस्ति
 दिवा. स्वस्तिमध्य. दिनास्ति. सर्व. स्वस्ति. लवनु.
 माकच. पापमागम. सर्वसत्ता. सर्वपाणा. सर्वरु.
 निनामया. सर्वरुदानि. पश्यतु. माकचिष्ट. पापमा.
 गम. जानिह. नूनानि. समागमानि. स्तिमानि. नूमां.
 पुथमां ॥ चालेथा कुरुभव. समस्तपूजासू. दिवाच.

८१
 मगो चचयनु धर्मः ॥ अग्नीष्टापन अग्निमल्लम्
 कुरु स्वाहा ॥ द्वागंगलि ॥ वाक्म ॥ उ संवह मन्त्र कुरु
 ॥ यजुना उवज्यजुन ॥ ३ ॥ नगाधान ॥ मगुजलि
 नाग्निमरध पंका ॥ संजान पन्नमायक म उपपियका
 पजान निका ॥ ५ ॥ निमभुलं पुंकाया इव पीनवधुं भक
 मुख चतुर्दश वामदधु कमभुलधन पीनाम्वजाराय ॥
 मुखं यद्ग पविन निभन अटामकटाका त्रि ॥ वज्रस
 बालकृन् भालिन समया निविनाय ॥ नक्ष हिमहास
 न देवसि द्विज सगुम गुहिला हनिमहाल श्री सहि
 भवस्वाहा ॥ इत्यनहाना निवाक्म ॥ थनवजथ नि
 ॥ ३ ॥ उं नार्किवाजु ॥ निलाजुन ॥ उं सर्वगथागन काय
 विल्ला धनस्वाहा ॥ अंखलखं हायाथ ॥ नगा अग्निममा
 न ॥ थनघुन ॥ धन ॥ चत्वापाधाय २९ पंवरुधस्वपुपं
 पुजायाथ ॥ नगा पथमाहानि ॥ स्वसिवाक्मयादि ॥
 अत्पआदिषादिपविषाविष महसिजिय हव्य कव्यवा
 हनाय यजमानस्य ॥ ५ ॥ निवृत्त पृष्टिं वृत्त पथमाहानि
 गृह २३ अं ॥ कुरु स्वाहा ॥ पंवापसाय पुजायास्यासुनि
 उं संन्यादि ॥ नय ॥ ॥ हामयाथ ॥ विहिव ॥ ५ ॥ नि
 पथमाहानि ॥ हृदयमं क्वावृहिय ॥ नगाहाना इनि

स्वस्तिवाक्क्यादिः ॥ मधुल्लहानाहानिगृह्ण २३
 ग्राहं रुद्राहाः ॥ शुलापानकल्लाथियः ॥ पञ्चपचाप-
 मुनिः ॥ नर्याः ॥ आग्निदसासिलः ॥ पुत्रनकिसात्रिस-
 नस्यः पूजायायः ॥ ॥ वज्रमहानायकायः ॥ ॥
 स्वावायः ॥ उच्चमहानायकायः ॥ समयकायः ॥
 धः स्वाः चाकायः ॥ मगविथः ॥ नायकायः ॥ हं धर्मावा-
 न्यादिः ॥ थुल्लिधूनकाः ॥ पुत्रकपूनकिः यरुक्कसंगाथः ॥
 निपुत्रखलूसचकिं नाथः ॥ पूजायायः ॥ (गाः) ज्वाविथः
 धुमाणावेकायः ॥ देवपूजाः ॥ देवनाहानिविथः ॥ ॥
 स्वस्तिवाक्क्यादिः ॥ देवनाहानिगृह्ण २३ ग्राहः रुद्र
 स्वाहाः ॥ पञ्चपचापपूजासुनिः ॥ नर्याः ॥ थनपूष्प
 निविथः ॥ मुद्रवानेवयः दक्षिणासहिगः ॥ स्वस्तिवाक्कः
 पूष्पहानिपूवयः २ गृह्ण २ ग्राहः रुद्र घृणाहानिस्वस्ति-
 स्वाहाः ॥ ॥ पञ्चपचापः पूजावास्यासुनिः ॥ ॥
 थनपूष्पविंकायः ॥ द्वापनकः ॥ चाकपूजाः ॥ किडामन-
 गुत्रपूजाः ॥ दक्षिणाकायः ॥ निधालाविथः ॥ विडार्क-
 नयायः ॥ सिद्धानेकः ॥ कल्लाहानिष्ठाकविथः ॥ ॥
 (हा) वाहानिविथः ॥ वृहद्भयः ॥ हवयकः हवयपानि-
 स्तानमुज २ रुद्रः ॥ घृणाहानिविथः ॥ ॥ देवनाहानि-

23

गृह्यघृणाङ्गनिसासिस्वाहा ॥ ॥ पंचापचारपूजास्तुतिः ॥
ॐ नमो गृह्यङ्गनिसासिस्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥

10/10/10

84

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ मङ्गलाश्रीलाकराधिका जिन
 वनमकुटा. जाम्बल. वाधिसन्ध. मेरीया. लावणपासि.
 सुखवन्. यकला. गङ्गा. रुद्रपाया. वृक्षा. वेलाचनाराय.
 निरुवन्. नमिग. प्रद. निधयथा ॥ गुह्या ॥ हृष्ट. काल
 वज्र. पञ्चपाणि. दमका. वज्रयन्त्र. कुरुमा ॥ योगाहावाह.
 नाडा. त्रिपुण्ड्रमथना. नकिनाभा. माहात्मा. मुञ्जान्य.
 पञ्चकमु. पतिदिनमथना. गन्धहस्त्रियमानी ॥ गुह्या ॥
 ॥ २ ॥ सद्यंगलाकवधू. गुह्या. निलया. वाधिविक्र.
 सूचिक ॥ वृद्धपायाद्यसिद्धि. विहिगवलिमलहिल्लका.
 नीलदधु. वृद्धासालिदवाडा. विजिन. जिनगुप्ता. सर्वसत्त्वा
 नुकंपा ॥ गुह्या ॥ ३ ॥ पद्मचुदावनाया. नदनचरुक
 नि. नूनसंलग्नरागा. मागीची. मायमाया. सकलरयहया.
 पीमवधू. निवका. मायूरी. मामकीच. विजिन. त्रिपुण्ड्र.
 पाशुपालाचनाराया ॥ गुह्या ॥ ४ ॥ गन्धारी. जागुपीच.
 रुद्रगृहि. नक्रना. खड्गपाश. कुरुगृहा ॥ बावाही. वज्रह.
 म्मा. असीपयसूधरा. धम्मवनिधवरीच. कयूरी. हानकमु.
 धरु. निगकला. यङ्गुआ. सर्ववीच ॥ गुह्या ॥ ५ ॥
 वीधमाल्या. सुगीविनाया. पथिग. जिनवन्. सावली.
 धूपवजा. वनालि. गन्धवजा. पुहसिगवदना. सागानि.

[illegible]

निशामया. सर्वरुदात्रिपस्पंदु. साकचिन्वापमागम.
 जानिह. श्रुमानि. समागमानि. श्लिमानि. श्रुमांपथमां.
 चलिथा. कूवेनुभव. सननपञ्जामू. देवाच. यशोचचचनु
 धर्मः ॥ ॥ ॥

सम्बन्. २०२५ साल. वेज्जय. कृष्ण. दशमीयां निरथो.
 भामवाक. खुद्रु. ॥ ॐ दंपुस्रक. नीलयाजवज्जवाच्यम.
 लिखितम् ॥ गावाहाल. थाल. वुवाहाल. भगवान्
 वाक. वल्लिग ॥ शुक्रम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मीजयागु. वीजारवं ॥

भवतां अग्रे एक वार्ता पार्थया मिमहामने ॥

भवतां अग्रे. छपिनिगु. होने. छगु. वै. नयाये.
 दुला धासा ॥

परोपकाराय. फलंतिवृक्ष. परोपकाराय. दुग्धं
 तिगाव. परोपकाराय. वहंति. नदी. परोपका
 राय. उदं शरिरः ॥ वृक्ष. धर्मसिमा.

परोपकाराय. फलंतिवृक्षः. म्पवा. मिस्तांग.
 अमासी. फरसी. अह. केश. पश्या. उपकार.
 लाभी हेरवं ॥ परोपकाराय. दुग्धं तिगाव.

गाव. धैव. सा. ^{हिं} पफां. न्याफां. डुरु विपिं सातनं डु.
 परया उपकार ला गि हेखं ॥ परोपकाराय. वहं ति नदी.
 तलाउं पुरु. पर्वते. पर्वते. तलाउं पुरुव. परया
 उपकार ला गि हेखं ॥ परोपकाराय. इदं शारिरे.
 ध. शारिरे. परया उपकार ला गि हेखं.
 द. पिसं. कन्या दान या ना. वीज्यात. असल हेजुल.

का. मीज्यागु. वीजारवं
 कायो हंश. नदी. जलवीना. धेनुश्च डुधं वीना.
 मीत्रे. पीती वीना. एहे. स्त्री वीना. वीद्या वीना.
 पारित्त ॥

कायो हंश वीना. ध. शारिरे. डुने. पारावा युमत.
 धाव. ध. शारिरे. दु. सोभामडु. नदी जल वीना.
 अधाति. तलाउं पुरु. लहम देक. दु. सोभामडु.
 धेनुश्च डुधं वीना. डुरु मयुष. सां. दु. सोभामडु.
 मीत्रे पीती वीना. पीती मडु. पासा. दु. सोभामडु.
 एहे स्त्री वीना. स्त्रीजाती. मीसामडुगु. हे. दु. सोभामडु.
 वीद्या वीना. पारित्त. वीद्यामस. आखं मस. ह.
 पारित्त. दु. सोभामडु.

द. पिसं. कन्या दान या ना वीज्यात. असल हेजुल.

48/1
मीमांसायागु. वाज्याखं

भवतां अग्रे. सकवार्ता पार्थपा। मिमहासते. ॥

भवतां अग्रे. द्वापिनीगु. होने. छगुरवें. वांति यां.

दुलाधासां ॥ ॥ सखान. विद्या. नतपोत्र. दान.

ज्ञानन. शीलं गा. गुणान. धर्म. तेमृत्यु. लोके. भुमि

भारभुता. मनुष्य. रूपेशा. मृगाचरंति ॥

येषान. विद्या. गुणोत्पेके. विद्यामदयाचनी. तप.

दान. धर्म. ज्ञान. गुणा. शील. स्वभाव. मद्वे.

तेमृत्युलोके. भुमिभारभुता. ध. मृत्युलोके.

पृथ्वीक. भारकावृद्धजुया. जीमी. जामचागा.

भुजोत्तमरु. दानधर्म. शील. स्वभाव. ज्ञान

गुणा. संपुर्णाउत्तमरु. धर्मीमउत्त.

मनुष्यरूपकथा. चला. वोहोत्तमरु. धर्मीमउत्त.

माली. मीजया. विजारव.

नक्षेत्रभूषणा. चंदो. नारीणां. भूषणापति ॥

पृथ्वी. भूषणा. राजा. शीलसर्वत्र. भूषणा ॥

नक्षेत्रभूषणाचंदो. नारागाया. शोभाहु. चंदमा.

नारीणां. भूषणापति. स्त्रीयाशोभाहु. दक्ष. स्वामी.

भात. पृथ्वीभूषणा. राजा. पृथ्वीयाशोभाहु. राजा.

शीलसर्वत्र. भूषणा. शीलस्वभाव. यकनहे. शोभा.

अथयानिंति. छेहं सीसामदे के दुशामड.
अथयानिंति छेपिसं कन्या दानयानावेज्यात
असल्लेजुल.

आशा मरुवा

426

I

ASHA ARCHIVES

9/17/11



5/21/11